

ऊ २/१६

# क्षपदा गीतचिन्तामणि

वाराणसी-५

आम्नाय-मन्थालय,

वाराणसी, कसीबो

वाराणसी-५

मन्थालय

वाराणसी-५

ऊ २/१६





❀ श्रीश्रीगौरहरिर्जयति ❀

# क्षणदागीतिचिंतामणि



कविवर—

श्रीमनोहरदासजी कृत (संकलित)



प्रकाशक—

संवत् २०१७

गौरपूर्णिमा

(फाल्गुनी)

बाबा कृष्णदास,

गवालियर मन्दिर, कुसुमसरोवर

पो० राधाकुंड (मथुरा)

मूल्य १-०० (रुपया एक केवल)

## ❀ उत्सर्ग-पत्र ❀

परम माननीय, परमविरक्त, श्रीगौरगोविन्दचरणै-  
कनिष्ठ, भजनपरायण, गिरिराज तरहटी पूँछड़ी  
निवासी श्री बाबा गौरगोविन्ददासजी के पुनीत  
स्मरण में उन्हीं के प्रिय शिष्य श्री छगन-  
लालजी चौपड़या बाला, गोघाट, मथुरा  
निवासी की अर्थसहायता से यह  
ग्रन्थरत्न प्रस्तुत होकर समर्पित  
हुआ है।

—बाबा कृष्णदास  
गौरपूर्णिमा (सं० २०१७)



## आम्नाय-ग्रन्थालय,

दो शब्द ! **नरतर्जि, करोती****नारायणी-५**

प्रस्तुत ग्रंथ के रचयिता भक्तमाल के टीकाकार श्रीप्रिया-दासजी के गुरु कविवर मनोहरदासजी हैं। आप ने अपने इस संकलन ग्रंथ में लगभग ब्रजलीला के ४७ महानुभाव कवियों के पदों का संग्रह रख कर अपने हार्द ब्रजलीला का महान् महत्व दिखलाया है। श्रील विश्वनाथचक्रवर्तीजी ने भी उधर अपने पूर्वाचार्य महानुभावों के पदों का संग्रह कर वंग-भाषा के पदों को महत्व दिया। दोनों ग्रंथ ही क्षणदागीतिचिन्ता-मणि नाम से प्रसिद्ध हुए। चक्रवर्ती जी का संग्रह पश्चिम विभाग नाम से ख्यात है। रात्रिकाल में लीलास्मरण करने के लिये ये दो ग्रंथ लीलास्मरणकारी गौड़ीय व अन्य वैष्णवों के जीवन रूप माने जाते हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में निकुंज विहार को क्रीडीकृत करते हुए राधागोविन्द के शृंगार सम्बन्धी ब्रजलीला का सरस वर्णन है। यह ब्रजलीला ही सर्वोपरि तथा निकुञ्ज विहार व नित्य-विहार का प्राण रूप है इसे सुदृढ़ बनाने के लिये ग्रंथकार ने नाना कवियों के पदों का उद्धरण देकर अपने ग्रंथ को सरस बनाया है। कवि ने हर क्षणदा के पहले अपने उपास्यदेव भगवान् श्रीगौरचन्द्र महाप्रभु के वन्दना रूप मंगलाचरण किया है जो कि गौड़ीय सम्प्रदाय की परिपाटी है जिसे "गौरचन्द्र" कहा जाता है।

## पूर्वविभाग की क्षणदा में—

कृष्णा प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा पर्यन्त तीस क्षणदा हैं जो कि श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती जी के द्वारा संकलित है। इस में क्रमशः (१) संचित्तसम्भोग, (२) वयः सन्धि, (३) मुग्धानायिका, (४) रूप-विरह, अभिसार, (५) संचित्त-सम्पूर्ण सन्धि,

मुग्धता मध्यता सन्धि, (६) मुग्धा, (७) मध्या, (८) मध्या, (९) मध्या के संकीर्णसम्भोग, (१०) मध्या के सम्पूर्ण सम्भोग, (११) विरह-मिलन, (१२) मिलन, (१३) मिलन, (१४) विरह-मिलन (१५) विरह-मिलन, (१६) पूर्वराग-रूपादिवर्णन, (१७) प्रगल्भा, (१८) विरह, (१९) वासकसब्जा, (२०) मान, (२१) सखी के द्वारा भाव दशा पूछने पर नायिका के द्वारा उसका वर्णन, (२२) प्रगल्भा, (२३) सखी द्वारा कृष्णाग्र राधा-विरहदशा तथा राधाग्र श्रीकृष्णदशा वर्णन, (२४) मान, (२५) प्रगल्भा, (२६) मिलन, (२७) मिलन, (२८) सखीद्वारा अभिसार, (२९) अभिसार, मिलन, रास, निकुञ्जविलासादि, (३०) रास, इन विषयों का क्रमशः वर्णन है।

प्रस्तुत इस पश्चिम विभाग की क्षणदा में—

क्रमशः (१) अभिसार, रास-विहार, (२) रास, (३) अनु-राग-सखीप्रेरणा, कुञ्जविहार, (४) अभिसार-कुञ्ज में मिलन, (५) श्रीकृष्ण के साथ मिलने के लिये सखी प्रेरणा-मिलन, (६) श्रीकृष्णरूपवर्णन, सखीप्रेरणा, मिलन, (७) मिलन, (८) मान, श्रीकृष्ण के द्वारा मान-मनावनी, कुञ्जविलास, (९) श्रीरूपवर्णन, सखीप्रेरणा, कुञ्जविलास, (१०) कृष्णरूपवर्णन, अभिसार, शय्याविहार, (११) कृष्णानुराग, सखी प्रेरणा, अभिसार, मिलन, शय्याविहार, (१२) सखी के द्वारा भाव-पृच्छा, अभिसार के लिये प्रेरणा, मिलन, (१३) कृष्णभाववर्णन, (१४) कृष्णरूप, सधन निकुञ्ज में विलास, (१५) मान, श्रीकृष्ण के द्वारा मनावनी, सुरंतसमर, (१६) श्रीकृष्णानुराग, राधाभिसार, कुंज-विलास, (१७) श्रीकृष्णभाववर्णन, सखी के द्वारा प्रेरणा, शरद-विहार, (१८) व्रजरस-राधाभिसार, गहवरवन में विलास, (१९) श्रीकृष्णरूप, सखीप्रेरणा, वनक्रीड़ा, (२०) अपने मनोगत भाव



( ३ )

वर्णन, अभिसार, मिलन, (२१) श्रीकृष्णरूप-सखीप्रेरणा, अभिसार, कुंजविहार, शय्याविहार (पुष्प) (२२) श्रीकृष्णरूप, सखी प्रेरणा, अभिसार, गहवरवन में निकुंजविलास, (२३) नायिका के द्वारा मनोगत भाववर्णन, मिलन, रास, कुंजविहार, (२४) कुंजविलास, (२५) वंशीध्वनि, अभिसार, मिलन-रास (व्रज-युवतियों के साथ) (२६) पुलिनविहार, रास, ललिता के द्वारा लताभवन में दोनों का शृंगारादि, (२७) सखीप्रेरणा, नृत्य-विलास-रास, (२८) रासक्रीड़ा, (२९) रात-नृत्य-मण्डलीनृत्य, (३०) शरदरास ।

इस पश्चिमविभाग की क्षणदा में—

मनोहरदासजी के २१, चतुर्भुजदासजी के १०, कृष्णदास के १५, हरिवल्लभ के ६, गोपाल के १, नन्ददास के १४, विहारिणीदास के ४, गोविन्दप्रभु के १३, स्यामसखी के १, नागरीदास के २, सूरदास के ६, सूरदास मदनमोहन के १७, मुरारीदास के ६, दामोदरहित के ४, हितहरिवंशजी के २४, कुंभनदास के ५, स्वामी हरिदास के १, सदानन्द प्रभु के ३, हितमोहन के १, परमानन्द के ७, व्यासजी के ३, चतुरविहारीजी के १, वल्लभजी के ६, विद्यापति श्रीगोपाल के २, गिरिधर के १, जादोप्रभु के १, विठलविपुल के ३, गदाधरप्रभु के ४, श्रीरामरायजी के ४, हरिनारायण श्यामदास के १, गोवर्द्धनेश के १, जगन्नाथ कविराय के ४, बनवारी के २, नरवाहन के १, सीलचन्द्र के १, कविमण्डन के १, हितभगवान के १, किशोरदासजी के २, नवलसखी के २, मथुराहित के १, नामदेव के २, हित-अनूप के १, जनहरिया के १, हितव्रजलाल के १, इस प्रकार कुल पद २२३ हैं ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने यह दिखलाया है कि-ब्रजरस ही राधा के साथ श्रीकृष्ण-विहार का महान हृदय है। यह ग्रन्थ ब्रज-लीला को लेकर चला है। सब ही आचार्य्य ब्रजलीला के उपासक हैं इस बात को सुदृढ़ एवं अपने इस ब्रज उपासना को परिपुष्ट के लिये ही ग्रन्थकार ने बहुत महानुभावों के पदों का उद्धरण किया है। इस में अभिसार, खण्डिता आदि नाना भावों का वर्णन है जोकि नित्य-विहार के महान पोषक हैं। प्रथम क्षणदा में-मनोहरजी के पद में “करत सिंगार चली बर भामिनी कौन गनै काहू की वरजनि” “मति कवहूँ लखि पावे गुरजनि” (दूसरा पद) कृष्णदास जी के पद में-“रास रंग लाल संग नृत्यत ब्रजभामिनी” (चौथा पद) “नृत्यत रास में गोपाल संग मुदित घोष नारी” (पांचमा पद)। द्वितीयक्षणदा में-नन्ददास के पद में-“इन वाँसुरी माईं सबै चुरायो हरि तो चुराये होते एक ले चीर। असन वसन अरु श्रवण नैन मन लोक लाज कुल धरम धीर” (दूसरा पद)।

तृतीय क्षणदा-दूसरे पद में “तूतौ बार बार नन्द घर उक्त-कत कत आवत जात। संध्या समय फिरि फिरि पाँव धरत जानी न जात यह भेद बात” (चतुर्भुज प्रभु), तीसरे पद में-“काछनि काछि गायनि पाछें मध्य मंडली आवैं”। (गोविंददास)

चौथा पद में अभिसार वर्णन है “निसि के शत्रु सब तेरेरी भामिनी मुखर नूपुर लेउ उतारी” (कृष्णदास प्रभु), आठमाँ पद में-“नदनन्दन वृषभानुनन्दिनी नेकु न चाह छुटी” (सूरदास जी)।

चतुर्थी क्षणदा में-“लाल वैठ मग जोवत” “तातें छाडि दै निठुराई” यहाँ मान है। (तीसरे पद)। चौथे एवं पंचम पद



( ५ )

में मान वर्णन है। पंचमी क्षणदा में—तीसरे पद में—“मोपै हिलग हिये में हेली कहा करे कुलकानि” (सूरदासजी)।

पांचमा पद में—“तो विनु कुंवरि कोटि वनिता युत मथत मदन की पीर” (हरिवंशजी)

षष्ठी क्षणदा—चौथा पद में—“कान्ह वोलावति सुन मृगनैनी राधा ब्रजभामिनी” (कृष्णदासजी)।

सप्तमी क्षणदा दूसरे पद में पूर्वाग वर्णन है। “जा दिनतें देखें इन नैननि ता दिनतें मोहि अधिक चटपटी” (परमानंदजी)। चतुर्थ पद में—“अति विह्वल हूँ परे धरणि धुकि तरुण तमाल पवन के जोर। कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहुँ चन्द्रिका मार (सूरदासजी)। पाँचमा पद में—“आकुल भई सुनि पिय की पीर” (वल्लभजी)। इन पदों में विरह का वर्णन है।

अष्टमी क्षणदा—छठा पद में—“जदपि बहु नायक कहु न मन अटके तेरे गुण रूप मोहै तोही सों री भाँवरि” (गोविंद प्रभु)। दशमी क्षणदा—दूसरा पद है—“जद्यपि मात पिता मोहै त्रासन महरी भवन में हूँ त्रण हूँ ते हरई” (सूरदास) यहाँ परकीया स्पष्ट है। पांचमा पद में—“जो तु अंग दुगय चली सग मेरे। मुख मौन ब्रत ले अधर ओट करि दसन दामिनी प्रकट तेरे” (चतुर्भुजजी)। ग्यारहवीं क्षणदा में—तृतीय पद में—“निलज भई कुल लाज गंवाई तिनसों कहा वसाई” (सूरदासजी)। चौथे पद में—“चल सखि मदनगोपाल बुलावे” (परमानंदजी)। तेरहवीं क्षणदा—प्रथम पद में—“निसि दिन तोहे जपत प्राणपति” ‘छाडि दियो सब कुंजविलास विहार विहारी’ (गोविंदप्रभु)। चौथे पद में—‘वृन्दावन बैठे मग जोवत वनवारी (सूरदास मदनमोहनजी) पन्द्रहवीं क्षणदा—चारों पदों में मान वर्णन है।

( ६ )

(शुक्लाक्षणादा) —

प्रथम क्षणदा—तीसरे पद में—‘जिनकैं लिये लोक निद्रा सख  
मैं ले दूरि धरी’ यहाँ परकीया स्पष्ट है (सूरदासजी)। चौथे  
पद में—‘हों तो अपने ते नहि टरि हों जग उपहास करो बहुतेरो’  
(सूरदासजी)

छठमाँ पद में—राधा अभिसार वर्णन है (मनोहरजी)।  
तृतीय क्षणदा—पहला पद में—‘ब्रज की खोरि सांकरी’।  
‘जित जित हों मग रोकत टोकत डगर तजति पग गढ़त कांकरी  
(सूरदासमदनमोहनजी)। दूसरे पद में—‘आजु मिलें पिय  
सांकरो गली’ (गोविन्दप्रभु)। चतुर्थ पद में—‘राधा अभिसार’  
(वल्लभ)। पाँचमा पद में—‘गहवर गिरि साँकरी गली’ (नागरी  
दासजी), पंचमी क्षणदा—‘घर घर यही चवावो ब्रज में मोही  
सो वैंर सुनि सुनि श्रवणनि दुख दहिये’ पहला पद में (सूर-  
दासजी), षष्ठी क्षणदा—पाँचमा पद में—राधिका अभिसार  
वर्णन है। सप्तमी क्षणदा—चौथा पद में—‘राधिका अभिसरति  
विपिन कुंजे’। ‘सतत गुरुलोक डर चकित आंकों भरत पथ  
विपथ देखत न सखिन सगे’। यहाँ परकीया स्पष्ट है।

अष्टमी क्षणदा—पहला पद में—‘हौं तौ भई बाडरी मन-  
मोहन वेगि मिलावरी’ (सदानन्दप्रभु)।

अष्टम क्षणदा से पन्द्रहवीं क्षणदा पर्यन्त रास का वर्णन है।  
राधावल्लभी सम्प्रदाय के आचार्य्य हितहरिवंशजी विशुद्ध ब्रज-  
रस के उपासक हैं यह दिखाने के लिये ग्रन्थकार ने उनके पदों  
का उद्धरण अधिक संख्या में दिया है। इस ग्रंथ में जिन महा-  
नुभावों के पदों का उद्धरण दिया गया है उन में अधिक संख्या  
गौड़ीय आचार्यों की है।



कविवर मनोहरदासजी श्रीगोपालभट्ट गोस्वामीजी की शिष्य परम्परा में श्रीराधारमण जी के सेवक हुए, जोकि वृन्दा-वन में उस समय परम रसिक शिरोमणि करके माने जाते थे । ऐसा है कि बड़े बड़े महानुभाव आकर उनके संसर्ग से रसिक बन जाते थे । इनके विषय में प्रियादास जी ने अपने भक्तमाल-टीका के परिशिष्ट में कहा है-“रसिकाई कविताई जाहि दीनी तिन पाई” “रसिक समाज में विराज रसराज कहै” (क० ६२७) श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी जी के शिष्य श्रीनिवासाचार्यजी, उनके श्रीरामचरण चक्रवर्तीजी, उनके रामसरणचट्टराजजी, उनके ग्रन्थकार कविवर मनोहरजी हैं । इनके बनाये हुए राधारमण-रससागर, सम्प्रदाय बोधिनी, रसिक जीवनि, प्रस्तुत क्षणदा-गीतिचिंतामणि ये चारि प्राप्त हैं । राधारमण रससागर का रचना काल सम्वत् १७५७ है । इससे कवि का समय स्पष्ट हो जाता है । श्रीराधारमण रससागर सम्वत् २००८ में हमारे द्वारा प्रकाशित हो चुका है । हाल में सम्प्रदाय बोधिनी भी प्रकाशित हो गई है । क्षणदागीतिचिंतामणि की हस्तलिखित प्राचीन प्रति बहु स्थानों पर मौजूद हैं । उन सब प्रतियों को मिला कर यथा साध्य प्रकाशन किया गया है । आशा है रसिक समाज इसका अनुशीलन व कंठहार कर हमारे परिश्रम का सार्थक्य करेंगे ।

इति ।

कृष्णदास



श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी  
श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी  
श्रीनिवासाचार्यजी  
श्रीरामचरणचट्टराजजी  
श्रीरामचरणचट्टराजजी





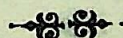
# ❀ क्षणदागीतचिंतामणि ❀

## प्रथमक्षणदा

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ  
संकीर्त्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ ।  
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्मपालौ  
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ ॥

राग—कल्याण ( उपताल )

गौर गोपाल रस रास मंडल रसिक मंडली मध्य मंडित सुरंगी ।  
रचित तांडव कला पंडित सिरो रतन बितनु शत कोटि जित  
चारु भंगी ॥ भ्रमक करताल वर ताल मिलि चर्चरी रीझि गति  
ले बजावत मृदंगी । तान अरु मान कल्याण गति भेद जब लेत  
सुर सरस तर सुघर संगी ॥ भाव भर भरित गुरु रचित  
गंभीर गुन गणन अतिरक्त द्रुत कनक अंगी । अरुण कर  
चरण नख चंद्र की चंद्रिका चमक लब लक्ष कृत बपु अनंगी ॥  
बाहु आजानु कृस कटि प्रसर वक्ष में स्वच्छ माला पुहप पंच-  
रंगी । बदन रदच्छदन सुख सदन सोभा अमित श्रवत धूर्णित  
नैन भुव तरंगी ॥ निरखि टक थकित मानो लिखि चित्रावली  
त्रिविध जन ताहि इक तान तंगी । हरसतर तरल आविरल पुलक  
कुल खचित चकित यत्तत उठावत उच्छंगी ॥ ललित अंग अंग  
सुवलित कलित माधुरी महक केसर मिलि मदकुरंगी । चरण  
परि चरण बिन आन नहीं आस जिय दास मनहरण जन करहुँ  
अंगी ॥



मधुर मधुर धुनि मुरली गरजनि ।  
करत सिंगार वली वरभामिनी कौन गनै काहु की बरजनि ॥ १

चनक मूँदि अकुलाय द्विरद गति मति कबहूँ लखि पावे गुरजनि ।  
 धीरज धरन कहत जब परिजन भौह चढ़ाएँ चितै हित तर्जनि ॥२  
 भूषण अस्त व्यस्त पहिरी मानो उलटी करि विधिना की सिर  
 जनि । चाहत चकित थकित भई शोचत करत विरोध नितंव पै  
 उरजनि ॥ श्रम जल भूषित नख सिख पुलकित बीच बीच अप-  
 धन की लरजनि । राधारमन मिलन नौछावर होत मनोहर चट  
 कत करजनि ॥४

( मालव )

अद्भुत नट वेष धरे नाचै जमुना तट श्याम सुंदर  
 गुन निधान गिरिवर धर रास रंग साँचै ।  
 जुवति जूथ संग मिलि गावत केदार राग  
 अधर वेणु मधुर मधुर सप्त सुरनि साँचै ॥  
 उरप तिरप लागि प्रगट तत्त थै थै थै  
 उघटत शवदाबलि गति भेद कोउ न वाचै ।  
 चतुर्भुज प्रभु बन विलास मोहे सकल सुर अकास  
 निरखि थकित चंद रथहुं पछिम नहीं खाँचै ॥

( मालव )

रास रंग लाल संग नृत्यत ब्रजभामिनी ।  
 मेघ चक्र मध्य बनी मानौ सौदामिनी ॥  
 औघर वर उरप लेत चपल भौह भामिनी ।  
 उलसित मन मदन केलि मानहुं सौदामिनी ॥  
 गोवद्धन धरण लाल रिझवत कर कामिनी ।  
 निरख थकित उडुपति सुख कृष्णदास स्वामिनी ॥



नृत्यत रास में गोपाल संग मुदित घोष नारी ।  
 तरु तमाल श्याम लाल कनक वेलि प्यारी ॥



❀ क्षणदागीतचिंतामणि ❀

[ ३ ]

चल नितंब किंकिनि धुनि लोल वंक मीवा ।  
 राग तान मान सहित वेणु गान सीवा ॥  
 श्रम जल कन भरे से वदन रैनि रंग सोहें ।  
 कृष्णदास प्रभु गिरिधर ब्रज युवतिन मोहे ॥



विहरत मंजुल जमुना तीरे । रतिरस कुशल जुगल अति लंपट  
 प्रविसत कुंज कुटीरे ॥ नख सिख अंग परस्पर वरन कुसुमनि  
 वेम बनाये । हरि परस्पर वारत तन मन मनहीं रीझि रिझाये ॥  
 हसि हसि मिलत कतहि कत चुंवत गैननि आनन्द धार । कत  
 कत सरस सिंगार होत यामें मिटत सबहि सिंगार ॥ बाजत  
 किंकिणि नाचत कुंडल मदन महोधि हिलोर । डोलत अरुभूत  
 द्वार परस्पर हसनि चितै चित चोर ॥ मरगज कुसुम सयन अति  
 सौरभ मुदित मधुप कल गान । हरिबल्लभ आलीहु रस निरवधि  
 रूप सुधारस पान ॥



गुनन गुही सुवास भौर फिरे आस पास फुलि रही कंठ लागि  
 अति सुखदाई है । कोमल सुमन जाको तिलो संग किये वन  
 उपजै सुनेह जानै रूप की निकाई है ॥ सीतल परस दृग देखेते  
 सरस अति स्यामलाल फूल देत अधिक छवि पाई है । आजु तौ  
 गोपाल लाल अपनी प्यारी बाल मालती की माला लों विसाल  
 उर लाई है ॥

॥ इति क्षणदागीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे प्रथमक्षणदा ॥

द्वितीय क्षणदा

(कल्याण)

गौर सुंदर सुघर रास मंडल लसत । सरस सुर गान के तान वस  
 विवश हूँ सजल लोईन मगन कबहुँ गावत हंसत ॥

वज्रत मादक मृदंग उघटत धा धा धलंग रंग भरि कर चरण  
चारण हियो गसत । मिलित करताल धुनि ध्यान गति सबनि  
मुनि प्रेम रस माधुरी श्रवण रसना रसत ॥ २ ॥ सुनत हीं  
त्रिविध जन सबनि के एक मन परम आनंद घन अंगम मारग  
धसत । असत अलाप में प्रसत तन मन करण एसोई भाग या  
सुख मनोहर लसत ॥ ३

( विहागरो )

इन बाँसुरी माई सबैं चुरायो हरि तो चुराये होते एकले चीर ।  
असन वसन अरु श्रवण नैन मन लोक लाज कुल धरम धीर ॥ १  
अधरामृत रस पीयत निधरक है तारों भई गरव गहीर ।  
नंददास प्रभु हियो हरि लीनों कासौ कहौ इह प्रेम पीर ॥ २ ॥

( बिहागरो )

कुंज महल के आँगन डोले वाहाँ जोरी विहरत राधारमण  
बिहारी । सुंदर मुख अति सु विलोकनि विधु चकोर बलिहारी ॥  
अंस मेलि भुज बेलि परस्पर कौतुक करत सुभाई । वचन विलास  
हुलास सुघर वर कर गहि रीझि रिझाई ॥ कुंचित अलक भलक  
आनन परि चहचरि नैन कीं कोर । नासा ललित बलित गज-  
मोती थरहरानि की जोर ॥ अरुण अधर बरषत मधु मानों  
मुसकनि मंद विकास । क्रोधति वरण वरण दसनावलि जब उप-  
जत कलहास ॥ गोर श्याम तन वसन विभूषण जगमग औरै  
भांति । शोभा म्पत अमित मनोहर निरख वारणे जात ॥ ५ ॥

रसिकवर रसिकनिके रस राशि ।

रसिक रमण रसिकन को जीवन युगल परस्पर हांसि ॥ १



कोक कला संगीत सिरोमणि अंग अंग लावन्य राशि ।  
 इह रस सम्पत्ति दम्पति पर वलि विमल विहारिणि दासि ॥२॥  
 ॥ इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्ण द्वितीया क्षणदा ॥

### तृतीया क्षणदा

देखौरी एक गौर मेह । नख शिखते मानो धरथौ है देह ॥१॥  
 नृत्य करत मानो प्रेम पवन वश । नैन भरत मानौ वर्षा घन रस ॥  
 वरण वरण आभूषण राजत । मानहुं विञ्जुल माला साजत ॥३॥  
 विच विच अट्टहास मानो गर्जनि । थर हरात हिय रोम रोम सुनि  
 सुनि ॥ ४ ॥ सींचत स्वजन वेलि मानो उलही । मनत मनोहर  
 नाहिन तुलही ॥ ५ ॥

### गौड़ी

तूतौ बार बार नंद घर उभकत कत आवत जात ।  
 संध्या समय फिरि फिरि पांव धरत जानी न जात यह भेदवात ॥  
 होत न चैन भवन आपनैं सखि छिन छिन तेरे कलपजात ।  
 गृहपति की कछु शंक न मानत रैन दिवश एकटक ही वित्तात ॥२॥  
 कहिवत और कहत कछु औरे लागि रहे चित ओरे ही घात ।  
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधर छवि निरखत मन अटक्यो इह श्यामलगात ॥

### गौरी

गिरिधर लालरी मोहे भावै ।  
 ग्रीवा लटकनि नैन की मटकनि मुरली मधुर बजावे ॥  
 वरिहा झलकनि गोरज अलकनि गौरी रागहि गावे ।  
 मृगमद तिलक सुधातु विचित्रित वनमाला नैन सिरावे ॥  
 काछनि काछि गायनि पाछे मध्य मंडली आवैं ।  
 निशि पति सो मुख निरखि गोविंद सुख वासर विरह बुझावे ॥३॥

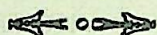
### कानरो

बेगि चलहि नव रंग निकुंज में बोलत गिरिधर धारी ।

नील निचोल सहज तन सुन्दरि तेरी भावति राति अंधियारी ॥  
 निसिके शत्रु सब तेरे री भामिनी मुखर नूपुर लेउ उतारी ।  
 तब लग मिलि जब लग नहिं प्रकटत उडुपति किरण कटक  
 उजियारी ॥ रसिकराय तब केलि कला हित स्वहस्त कमलदल  
 सेज सँवारी । कृष्णदास प्रभु सुरत सुधानिधि सुखनिधान जुव-  
 तिन मनहारी ॥

( विहागरो )

कौनसों सुकृत पाय रसिक कुँवरवर । सोहे शिर सेहरो नवल  
 नव नेहरो प्रथम मिलन नैना भयोरी कलपतर ॥१॥ अति रति  
 रुचि वाढी प्रेम प्रथि परी गाँढ़ी वाँह गहि सखी ठाढी गयो है  
 लाज को डर । बैठे हैं कुंज महल तलप सुमन दल स्याम सखी  
 पाये वलि अति रस पायौ भर ॥२॥



पैने नैना चलत झपकत उखलत ।  
 पलक चपल कुँडल विलोलित कच आनन पर हलत ।  
 चुंबन परिरंभन भर जलक लाल ललित ।  
 नागरिदास अधर पान पिय प्राण पलत ॥

रसिकिनी रस में रहत गढ़ी ।  
 कनक बेलि वृषभानुनंदिनी श्याम तमाल अढ़ी ॥  
 विहरत श्री गिरधरण लाल संग कौनों भांति पढ़ी ।  
 चतुर्भुजदास निरखि दंपति छवि अति रस केलि बढ़ी ॥२॥

—०—

चलोकित देखन कुंज कुटी ।  
 सुंदर श्याम मदनमोहन जहां मनमथ फौज लुटी ॥  
 नंद नंदन वृषभानुनंदिनी नेकु न चाह छुटी ।



सुरत सेज में लरत अंगना मुकता माल टुटी ॥  
 उरज तजि कंचुकी चुरकुटि भई कटि तट ग्रंथि खुटी ।  
 चतुर शिरोमणि सूर नंदसुत लीनी अधर घुटी ॥३॥

इति गीतचिंतामणौ परिचमविभागे तृतीया क्षणदा ॥

### चतुर्थी क्षणदा

॥ राग गौरी ॥

विधिना गौर चंद्र सौ नातौ ।  
 जबतें कियो हियो नहिं भावत दियो जगत करि हांतो ॥  
 अब काहू की बात सोहात न कहौ कहा धौं कीजै ।  
 नैन चकोर चंद्रिका जीवन बिन ध्याये क्यों जीजें ॥२॥  
 भई ढीठ सब इठ पीठ दई लई जगत उपहास ।  
 वन वन फिरत परत कल नाहीं कैसे सोहावे वास ॥३॥  
 करि इलाज शरण आवन की और नहीं कछु आस ।  
 करुणासिंधु अनाथ वंधु सुनि जियत मनोहरदास ॥४॥

॥ कल्याण ॥

मोहन मुखारविंद पर मनमथ कोटि वारौं री माई ।  
 जिहि जिहि अंगनि दृष्टि परत है तिहि तिहि परत लुभाई ॥  
 अलक तिलक कुंडल कपोल की छवि एक रसना भोपै बरनि न जाई  
 गोविंद प्रभु की बानिक पर वलि वलि रसिक चूडामणि राई ॥२॥

( राग कानरो )

लाल बैठे मग जोबत चनक चनक उत्तर देत कैसे बने माई ।  
 तनक तनक रजनी छीजत भनक भनक चलिये बलि जाऊ पण  
 करिहों आई ॥ भई है भवन मूदि चनक कहूँ न सुनिये वनक  
 भनक तनक की सबै बात तातें छाड़ि दै निठुराई ॥ नंददास  
 प्रभु सो एतो नहिं कीजिये तोहि कहा सीख दीजिए तोपै और  
 सीखे चतुराई ॥२॥

( कान्हरो )

प्यारी तोहे बोले रसिक गोपाल री तूँ कत करत नहिं आं । प्रेम  
समागम रीस काहे कों करत आँसु ढारत अलियुग मुखते  
मकरंद खसि परत शरद कमल महिआं । गिरिधर कुँवर ठाड़े  
नवनिकुंज के द्वारे पठईरी तोहि लेन कहि आं । कृष्णदास  
बलिहारी पांय धारिये रसिक कुँवर लालन पहि आं ॥१॥

—०—

राधा जू कौँ ललिता मनाय लीए आवत हरिजू के कान परी नूपुर  
भणक । तलप रचित किसलय दल हाथ रहै अरु प्रति धुनि  
भई वाजत भनक ॥ जब जब जाइ भेट भई हरि हिये भरि लई  
ऐसे फिरि परसत रहत काँसे की ठनक । सूरदास मदनमोहन  
प्रिय राधा । र बार हँसत बैठे पर्यंक कनक ॥२॥

—०—

स्याम निकट सन्मुख होय बैठी श्यामा कंचनमणि आभूषण  
पहिरै । सांवरे तन में प्रतिविंबित है मानो स्नान करन पैठी  
यमुनाजल में गहरे ॥ अंग अंग आभास तरंग गौरता श्यामता  
सुन्दरता शोभा की लहरें । सूरदास मदनमोहन मोपै कहि न  
आवत मेरे दृष्टि न ठहरें ॥२॥

—०—

श्यामा तेरे डहडहे नैन कमल अलि फूले अमल वदन सरोवर  
अन्तर । सोहत तारे कारे कजरारे मानो बीच परे मधुकर ॥  
दुरनि मुरनि चितवनि छवि सों ही लजोही चषलोही अखियन  
में मनहरन वरुणि तरुणी की छवि निरखि निरखि  
अपवश कीने नंदकुँवर वर । मुरारीदास प्रभु प्यारी तिहारे ऐसे  
दृग मृगज सुहाव भाव कटाक्ष लोचन काम दुःख मोचन जीते  
ही समर सर ॥२॥



❀ क्षणदागीतचिंतामणि ❀

{ ६

॥ कान्हरो ॥

कहत पियासों स्याम लाल ललना कलबानी ।  
 मुख अंचल चंचल गति नैना निगखि पिया सुख सानी ॥  
 मृदु मुसकानि भाति नव नागरि लालन नवल केलि रस ठानी ।  
 दामोदर हिन अंस बाहु कसि अधर सुधारस पानी ॥२॥

—०—

कुंज महल विहरत वर नागर दौऊरी पिय प्यारी ।  
 दुरि ललितादिक बाहिर सखीजन चितवति रहति सुखारी ॥  
 गान करत पिक मोर मधुपकुल सुनवति श्रवन सुभारी ।  
 सुरारि प्राणपति दोउ छवि निरखत कर चटकत तन वारी ॥२॥  
 इति गीतचिन्तामरणो पश्चिमविभागे चतुर्थीक्षणदा ।

पंचमी क्षणदा

( कल्याण )

निशिदिन इहै सोच मेरे उर ।  
 कौन काज ब्रजराज कुँवर वर धारचौ गौर कलेवर ॥१॥  
 सुख को परम सदन वृंदावन परिजन निपट सनेह ।  
 सो सुख छाड़ि वसत नदिआपुर समझ परत नहि एह ॥२॥  
 संकीर्तन रस संतत बिलसत कौन माधुरी तामें ।  
 भोगी रस सिंगार सार तजि लोभी होइ रहे यामें ॥३॥  
 जाकौ भाव करी ऐसी गति सो सबतें अधिकारै ।  
 इह अनुमान मनोहर तन मन चरण कमल बलि जाई ॥४॥

॥ कान्हरो ॥

वारिज वदन देखि विथकित भये लोचन मधुप लालची मेरे ।  
 मिले जाय अकुलाय अगमने कहा भयो धूँधट पट घेरे ॥१॥  
 चंचल चपल अटक नहि मानत वरवट चितै चपरि भये चेरे ।  
 काहे कों बाबरि वक्त वाद ही ईहा को मानत मन्त्र तेरे ॥

चित चुभि रही माधरी मूरति एकहि गांठि केते ही फेरे ।  
 सूरस्याम सुंदर मुख निरखत गये मग विसरि डाहिने डेरे ॥३॥

—०—

हेलि हिलग की पहिचानि ।  
 मोपै हिलग हिये मे हेली कहा करे कुल कानि ॥१॥  
 हिलगि पतंग करी दीपक सों तन सों येहै आनि ।  
 कस क्यों नहीं जलत ज्वाला में सही प्राण की हानि ॥  
 हिलग चकोर करी है शशि सों पावक चुगत न मानि ।  
 हिलग हि नाद स्वाद मृग मोह्यो हनत पाग्धीतानि ॥  
 हिलग हिलाग मिल्यो सब गुण तजि मधुप कमलही जानि ।  
 ऐसेहि हिलग लाल गिरिधर सों सूरदास हिये जानि ॥४॥

—०—

तेरे तन की वरण तम हरण देखि श्याम रीझ रीझ पीताम्बर  
 उर धारचो । तैं धारचो नीलाम्बर और श्याम पोत नैननि काजर  
 न्यारो ॥ मन तो हो तो एक पहिलहि अब तन अदल बदल  
 एकै कीयो इह में जीव विचारचौ । सूरदास मदनमोहन श्यामा  
 प्रीत परस्पर निरखि निरखि अपनपौ वारबौ ॥२॥

इमन

चलहिं किन भामिनी कुंज कुटीर ।  
 तो बिनु कुँवरि कोटि वनितायुत मथन मदन की पीर ॥  
 गद गद स्वर विरहाकुल पुलकित श्रवन विलोचन नीर ।  
 क्वासि क्वासि वृषभानु नंदिनी विलपत विपिन अधीर ॥  
 वंशी विशिख व्याल मालावलि पंचानन पिक कीर ।  
 मलयज गरल हुताशन मारुत शाखामृग रिपु चीर ॥  
 हित हरिवंश परम कोमल चित चली चपल पिय तीर ।  
 सुनि भय भीत वज्र को पंजर सुरति सूर रणधीर ।



## ❀ क्षणदागीतचिंतामणि ❀

[ ११ ]

( विहागरो )

सुंदरता की राशि कपोलनि । कृपा रङ्ग रस नैन चुहचुहे  
कोटि अमृतसम हँसि मृदु बोलनि ॥१॥ भाल तिलक मृगमद  
रूचि सौ सखि भौंह विलास मन मथत कपोलनि ॥ कानन कनक  
फुल कुंचित कच मोहन वरह मुकुट की डोलनि । मुरली कुणित  
उदार अधर वर नख रूचि अंक मणि निरमोलनि ॥ शोभित तामें  
कनक की सम्पुट भूषण नंद दिये बहु मोलनि ॥३॥ नव निकुंज  
में पिया रस वस भये सहस्र कला अंचल झक झोलनि । कहे  
कृष्णदास लाल गिरधर पिय मन भावनि कंचुकि वंद खोलनि ॥४॥

—०—

मदन मोहन संग विलसत गोरी । नवल किशोरी वृषभानुनंदिनी  
प्यारी मधुर हँसति अति रस में वोरी । नव नव प्रीत परस्पर  
अरुभी मानो घन दामिनी राजत जोरी ॥ मुरारी प्राणपति दृढ़  
परिरम्भन प्रेम मगन वनमाला तोरी ॥२॥

—०—

नवल किशोर नवल नागरिया ।

अपने भुजा श्यामभुज ऊपर श्याम भुजा अपने उर धरिया ॥१॥  
करत विनोद तरणि तनया तट श्यामाश्याम उमगि रस भरिया ॥  
यौ लपटाई रही उर अंतर मरकत मणि कंचन जैसे जरिया ॥२॥  
उपमा को घन दामिनि नाहीं कन्दर्प कोटि वारने करिया ॥  
कृष्णदास बलि बलि या जोरी पर नंदनंदन वृषभानु दुलरिया ॥३॥  
इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे पंचमीक्षणदा

षष्ठी क्षणदा

( कानरो )

आजु मैं गौरचन्द मुख देख्यौ ।

सुंदरता को सार रंग गहि विधिना चित्र विशेख्यौ ॥१॥

नैन कमल गुण असित सितारुण तारुण ता मध्य भलकै ।  
 भुज भरी बैठे रस मधु पीयत उड़त भवर वर अलकै ॥२॥  
 अरुणित अधर नासिका उन्नत चिवुक चारु सुख देन ।  
 वधुक चम्पक मुकुल जलज दल उपहासति मानो मैं ॥३॥  
 ज्यों देखत ज्यों आवत तबहिं नहिं आवत बिनु देखें ।  
 ऐसी लगन मगन के आगे कौन मनोहर लेखें ॥४॥

( गौरी )

हरयो मन चपल चितवनि चारु ।  
 चकित तामरस लोहित लोचन निरखत नंदकुमार ॥१॥  
 बुद्धि विथकी बल विकल सकलअङ्ग विसरयो गृह व्यौहार ॥  
 कुम्भनदास लाल गिरधर बिनु और नहीं उपचार ॥२॥

श्याम कपोलन में कनक कुण्डल भाई ।  
 कुंचित केशनि बीच राखी चंपकली अरुभाई ॥१॥  
 विश्वमोहन मोहन देखत मनमथ रह्यौ लुभाई ।  
 गोंविंद प्रभु के अङ्ग अङ्ग पर वारों कोटि जुन्हाई ॥२॥३॥

( कानरो )

कान्ह बोलावति सुन मृगनैनी ए राधा ब्रजभामिनी ।  
 सुनि मन मुग्ध विफल जाति हेरी तु कुसुमाकर जामिनी ॥१॥  
 काम रतन सुख आगर नागरि तू अनुरूप की कामिनी ।  
 लै मिलि भेंटि उरज उर सफल उ राजहंस गति गामिनी ॥  
 कृष्णदास स्वामी गिरिधर प्रिय तू युवतिनकी स्वामिनी ।  
 दुहु भुज बीच बनी अति सोहइ मानों मेघ सौदामिनी ॥३॥४॥

( कानरो )

प्यारी तेरौ वदन अमृत की पंक तामें बिधे नयन दोई ।  
 चित चल्यो काढ़ने कौं विवि कुच संधि सम्पुट में रह्यो भोई ॥



बहुत पाय आहिरी प्यारी परत न कन सोई ।  
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी ऐसे रहौ होई ॥२  
( त्रिसन गौरी )

इन बोलनि पर हौं वारी ।  
हात गहे बतरात परस्पर रूप छके पिय प्यारी ॥  
कोउ कोउ बातन मानत आर्मान लाल करत मनुहारी ।  
सदानंद प्रभु बात बनावत सुनि बिहँसी सुकुमारी ॥२॥  
( बिहागरो )

आजु बन क्रीड़त श्यामा श्याम ।  
सुभग बनी निसि सरद जामिनी रुचिर कुंज अभिराम ॥१  
खंडन अधर करत परिरम्भन एँचत जघन दुकूल ।  
उर नखपात तिरीछी चितवनि दम्पति रस समतूल ॥२  
वै भुज पीन पयोधर परसत, वांस दृशां पिय हार ।  
वसुनि पीक अलक आकरषत समर समित शतमार ॥३  
पल पल प्रवल चौंप रस लंपट अति सुन्दर सुकुमार ।  
हित हरिवंश आजु तृण दूटत हौं बलि विशद विहार ॥४॥  
( रापसा )

निरखी सखी सुख सैन कौं पौढ़े प्रिय प्यारी ।  
नैन नैन आलस भरे कसिके अंक वारी ॥१  
मरगजे वसन विराजहौं सौंधे अङ्ग भीने ।  
दरसति दम्पति देह दुति ओढ़े पट भीने ॥२  
भये कपोल तबोल युत अद्भुत छावि पावे ।  
रदन सदन सुख सम्पदा काह कापै आवैं ॥  
अलबेली आलिगन एंडाए जंभानी ।

हित मोहन मन में खुभी ईपद सुसकानी ॥८

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे षष्ठी क्षणदा

## सप्तमी क्षणदा

॥ कान्हरो ॥

अद्भुत एक देखे मैं आज । कनक धराधर कीर्त्तन माँझ ॥१॥  
 थावर कबहु कबहु जंगम गति । कबहुक फिरत चक्र की आकृति ॥  
 ऊपर तें भरणा वहि आवति । गहवर मधि केहरि गुंजरावति ॥३॥  
 चहुँदिश तैं मुकलित बनराई । बिच बिच कोईल कुँहक निमाई ॥४॥  
 धरणि कंपावति कंपनिकाई । मुदित मनोहर बलि बलि जाई ॥५॥

—०—

गिरधर बांधे माई पाग लटपटी ॥

जा दिनतें देखे इन नैननि ता दिनतें मोहि अधिक चटपटी ॥१॥  
 चलहि जात मुसकात मनोहर हँसि जो कही एक बात अठपटी ।  
 हों सुनि श्रवन भई अति आतुर हृदय परी मेरे मदन सटपटी ॥२॥  
 कहारी करौं गुरुजन भये बैरी निशिवासर मोखों करत खठपटी ।  
 परमानंद प्रभु रूप विमोहित नंदनंदन सों प्रीत अति जटी ॥३॥

ईमन

माई री श्याम लग्यौ संग डोलै ।

जित ही जाऊँ तितही रोकत है अनबोलाये बोले ॥ १ ॥  
 कहा करौं नैननि लोभिन सों वश कीनि बिन मोलें ।  
 कुम्भनदास लाल गिरिधर पिय हँसि करि घूँघट खोले ॥२॥

—०—

चितयो चपल नैन की कोर ।

मनमथ दुसह वान अनियारे निकसे फूटि हिये दुहु ओर ॥१॥  
 अति विह्वल है परे धरणि धुकि तरुण तमाल पवन के जोर ।  
 कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहुँ चन्द्रिका मोर ॥२॥  
 वचन न फुरत नैन न उघरत ऐसे कमल भये विनिभोर ।  
 प्रेम सलिल भोज्यौ पिय के उर पौँछि निचोरत अंचल छोर ॥३॥



छिन वूडत छिन ही छिन उछरत विरह समुद्र के परे हिलोर ।  
सूर अधर मधु सींच जियावों जागे मूरछित नंदकिशोर ॥४

॥ कान्हरो ॥

आकुल भई सुनि पिय की पीर । नहिँ सँभारत लोचन नीर ॥१  
अस्त व्यस्त करि भूषण चीर । पहिरि चली यमुना के तीर ॥  
गुरुकुल लाज शील मति धीर । प्रेम कृपाण करे चहु चीर ॥३  
जाइ मिली जब कुंज कुटीर । तब बल्लभ मन भये सुथीर ॥४॥

( विहागरो )

नव निकुंज किशोर किशोरी करत हास परिहास ।  
प्रीतम पाणि उरज वर परशत प्रिया दुरावति वास ॥१  
कामिनि कुटिल भ्रुकुटि अवलोकति दिन प्रति पद प्रतिकूल ।  
आतुर अति अनुराग विवश हरि धाइ धरत भुज मूल ॥२  
नागर नीवि बन्धन मोचत एंचत नील निचोल ।  
बधू कपट हठ क्रोप करत कल नेति नेति मधुबोल ॥३  
परिरम्भन विपरीत रति वितरत सरस सुरत निजु केलि ।  
इन्द्र नीलमणि मय तरु मानो लसत कनक की बेलि ॥४  
रतिरण मिथुन ललाट पटल पर श्रम जल सीकर संग ।  
ललितादिक अंचल भकभोरत मन अनुराग अभंग ॥५  
हित हरिवंश यथामति वरणत कृष्णरसामृत सार ।  
श्रवण सुनत प्राय करति राधा पद अंबुज सुकुवार ॥६

—०—

हों बलि जाऊँ नागरि श्याम ।

ऐसे ही रंग करौ निशि वासर वृन्दा विपिन कुटी अभिराम ॥१

हास विलास सुरत रस सींचत पशुपति दग्ध जिवावत काम ।

हित हरिवंश लोल लोचन अलि करहु न सफल सकल सुखधाम ॥

—०—

पौढ़े राधिका के संग । रचित सेज सुगन्ध शीतल रतन जटित  
 पर्जन्य । नव किलोर नवल किलोरी गौर स्याम अङ्ग ॥१॥ दशन  
 खण्डित वदन वीरी भरे रति रस रंग ॥ २ ॥ रसिकनि संग  
 रसिक गिरिधर मुदित जीति अनंग । उपजत चतुर्भुजदास दुहुँ  
 द्विशि प्रेम सिंधु तरंग ॥३॥

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे सप्तमीकृष्णक्षणाक्षणदा ॥

अष्टमी क्षणदा

अडानो

काहे को मान बढ़ावत हो बाल मृग लोचनि ।  
 हौं बड़ रति कछु कहि न सकति एक बात संकोचनि ॥१॥  
 मत्त मुरली अंतर तब गावत जागत शयन तबाकृति शोचनि ।  
 हित हरिवंश महामोहन पिय आतुर अति विरहज दुःख मोचनि ॥२॥  
 ( विहागरो ) इमन

बैठे लाल निकुंज भवन ।  
 रजनी रुचिर मल्लिका मुकुलित त्रिविध पवन ॥१॥  
 तू सखि काम केलि मनमोहन सदन दवन ॥  
 वृथा गहरकत करत कृशोदरि कारण कवन ॥२॥  
 चपल चली तन की सुधि विसरी सुनत श्रवण ।  
 हित हरिवंश मिले रस लम्पट राधिकारमण ॥३॥  
 कानरो विहागरो ॥ इमन ॥

हौंजो कहति एक बात सखी सुनि काहे कौं डारति ।  
 प्राणरमण सौं क्यों वकरहति आगस बिनु आरति ॥१॥  
 पिय चितवत तब चंदबदन पर तू अधोमुख निजचरण निहारति ।  
 वै मृदु चिवुक प्रलोह प्रबोधत तू भामिनि करसों कर डारति ॥२॥  
 विवश अवोर विरह अति कातर तू बिनु ओर कछु न बिचारति ।  
 हित हरिवंश रहसि प्रीतम मिलि वृषित नैन काहे नहिं प्रतिपालति



( कान्हरो )

खंजन मीन मृगज मद मेढत कहा कहौ नैननि की बातें ।  
 सुन सुन्दरि कहालों शिखड़ मोहन वशीकरण की बातें ॥१॥  
 बंक निशंक चपल अनियारे अरुण श्याम सित रचे कहाँते ।  
 डरत न हरति परायो सर्वसु मृदु मधु मिव मादक दृगपाते ॥२॥  
 नैकु प्रसन्न दृष्टि पूरण करि नहि मो तन चित यो प्रमुदाते ।  
 हित हरिवंश हंस कल गामिनि भावै सुकरौ प्रेम के नाते ॥३॥

—०—

मेरे तुं जिय में वसत नवल प्रिया प्राण प्यारी । तेरे ही दरस  
 परस राग रङ्ग उपजत अरु मान जिनि करौ हाहारी ॥१॥ तू ही  
 जीवन तू ही प्राण तू ही सकल गुणनिधान तो समान नाहिन  
 कोउ मो हितकारी । व्यास की स्वामिनी तेरी मया ते में पायो  
 है नाम बिहारी ॥२॥

केदारो

आज बने लालन आये तेर प्राण करि निछावर । जदपि बहु-  
 नायक कहु न मन अटके तेरे गुण रूप मोहे तोही सों री  
 भाँवरि ॥१॥ वैसे री लालन पर तन मन दीजे समुझि सयानि  
 घरि घरि घटत विभावरी । दूती के वचन सुनि मिलीरी गोविंद  
 प्रभु राखे बाँधि सुहाग दामरी ॥२॥

—०—

नवल नागरि नवल नागर किशोर मिलि कुंज कोमल कमल दलनि  
 सेव्या रची । गौर श्यामल अंग रुचिर तापर मिले सरस मणि  
 नील मानो मृदुल कंचन खची ॥१॥ सुरत नीवि निबन्ध हेत  
 प्रिया मानिनी प्रिय की भुजनि में कलह मोहत मची ॥  
 शुभग श्रीफल डरज पाणि परसत रोष हुंकार गर्व दृग मझि  
 भामिनि लची ॥२॥ कोक कोटिक रमस रहसि हरिवंश हित  
 विविध कल माधुरी किमपि नाहिन बची । प्रणय में रसिक

ललितादि लोचन चपक पिवत मकरन्द सुख रासि अन्तर सची॥३  
इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे अष्टमी क्षणदा ॥

### नवमी क्षणदा

धनाश्री

हरि हरि कौन कृपा रस एह । धन्य गौड धरणी जहाँ लोकन  
अवलोकत हरि गौर देह ॥१॥ विनहि जतन नव प्रेम रतन सों  
सबहिन के यहाँ भरचो गेह । सबही रसिक सबही हरि बल्लभ  
राजत यहाँ परस्पर नेह ॥२॥

आली मेरे नैननि ही सब खोरि ।

निरखि बदन श्याम सुन्दर को बहोरि नहीं बहोरि ॥१

यद्यपि जतन करति युवति हौ घूँघट ओट अकोरि ।

तऊ उडि मिले बधिक को खगलों पलक पीजरा तोरि ॥२

बुधि विवेक बल बचन चातुरी पहिलेइ लई चोरि ।

अबतो विवश भई संग डोलति ज्यों गुडिया बश डोरि ॥३

अवधौ कौन हेतु हरि हमसों चितवत हैं मुख मोरि ।

सूरदास दोउ सिंधु सुधा भरि उमगि मिले मति फोरि ॥४

( कल्याण )

आज और कालि और दिन प्रति और और देखिये रसिक

गिरिराज धरण । छिन प्रति नव छवि वरणे सों कौन कवि नित

ही शृंगार लागे वरण वरण ॥१॥ शोभा सिंधु अङ्ग अङ्ग मोहित

कोटि अनङ्ग छवि की उठत तरङ्ग विश्व को मन हरण । चतुर्भुज

प्रभु गिरिधारी कौ रूप सुधापान कीजै जीजै रहिये सदा शरण ॥२

ईमन

मोहन मोहिनी घाली सिर पर । जोहि मोही रहति निशि वासर

जौलों ना देखों ब्रजराज कुँवर वर ॥१॥ यद्यपि धीरज धरी



रहत सखि तदपि मुरली धुनि प्राण हरण कर । अब न रह्यौ परे  
गोविंद प्रभु बिनु रसिक कुँवर नव घन सुंदर वर ॥२

( विहागरो )

चलो सखि कुंज गोपाल जहां ।

तेरी सौ मदनमोहन पै चलि ले जाऊँ तहाँ ॥१

कुसुम मन्द मलयानिल और कदंब की छाहां ।

तहां निवास कियो मनमोहन तेरे तन मन महां ॥२

ऐसी बात सुनत ब्रज सुंदरि तोहे रह्यौ क्यों जावे ।

परमानंद दास कौ ठाकुर भाग बड़े तो पावे ॥३

आनंद-पञ्चावली  
रसनिधि, रसिक  
रसवली-१

प्रेम पुंज के कुंज सदन में बैठे करि रूप सिंहासन ।

अति आवेश रसिक दोउ जन खेलत हैं दृग पांसनि ॥१

आपन कहत और की न सुनत रीझ रीझ परत है हांसन ।

चतुर विहारि विहारिणी को सुख को समुझे इन गांसन ॥२

धनाश्री

नैनन पर वारौं कोटिक खंजन ।

चंचल चपल अरुण अनियारे अग्रभाग बन्यौ अंजन ॥

रुचिर मनोहर वक्र विलोकत सुरत समर दल गंजन ।

हित हरिवंश कहत न बनें छवि सुख समुद्र मन रंजन ॥२

—०—

जोवन रंग रंगीले सोने से गात ढरारे नैन कंठ पोति मखतूली ।

अंग अंग अनङ्ग भलकत कानन वीरें शोभा देत देखत ही

बनें जोन्ह में जोन्ह सी फूली ॥१॥ तन सुख सारी लाही अंगिया

अतलस अतरोटा छवि चारि चारि चूरि पहुँचिन पहुँची खमक

बनी नक्र फूलि जेव मुख वीरा चौका कौधे सभ्रम भूली । ऐसी

ही नित्य विहारिणी श्री विहारोलाल सौ अति आधीन ज्यों तरु

तमाल लटपटात कुंज द्वार हरिदासी जोरी सुरत हिंडोरे भूली ॥२



सुनहु रसिक जन इह वृंदावन अद्भुत एक जोटि मैं देखी ।  
 वैसी कछु बनि तैसी मोपै कहि न परै त्रिभुवन महुँ लेखी ॥१॥  
 इंद्रनीलमणि मय तरु मानो नव जांवूनदलता विसेखी ।  
 असित सुधाकर गौरचद्रिका भूतल चकित भये अनिमोखी ॥२॥  
 मानहु कनक कसौटी ऊपर मदन स्वर्णकार कृतरेखी ।  
 मानहु तरुण तमाल मल्लिका नव जलधर सोंदामिनी पेखी ॥३॥  
 को इह रूप कहां ते प्रकटित गिरिधर नागर सहज सुपेखी ।  
 सुनि कृष्णदास स्याम अरु स्यामा मम रहु इह उर अंतर लेखी ॥  
 इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे नवमी क्षणदा ॥

### दशमी क्षणदा

#### राग-गौरी

तुम मत देखहु गौर हरि । जो चाहौ घर वसति करी । अरुण  
 नयन जल भरत निरंतर । देखत ही सां पैठे अन्तर ॥१॥ पुत्र  
 कलत्र पिता नहीं भावे । अश्रु कम्प पुलकादि करावें ॥ वल्लभ  
 होय कृष्ण गुण नाम । अरु वृंदावन तरुतल धाम ॥३॥

( इमन )

हरि चितवनि मेरे जिय तें न टरई ।  
 अटक रह्यौ सांवरी मूरति में पचिहारी कें हु न निखरई ॥१॥  
 यद्यपि मात पिता मोहे त्रासत भइरी भवन में हूँ त्रणहू ते  
 हरई । तदपि रह्यो न परे सुन सजनी बिन देखें उर अंतर  
 जरई ॥२॥ जाकों विगारि परचो चित चंचल भली बुरी सब सिर  
 पर धरई । सूरदास मन हरिरस अटक्यौ को जाने मीठी अरु  
 करई ॥३॥



( ईमन )

हैं डोलति इन नैननि की लई ।  
 कहारी करें लोभि नैन के कारण पर आधीन भई ॥  
 स्थास तमाल मूल संजुल अवलोकन बेलि बई ।  
 सींच सींच अनुराग प्रेम जल अनुदिन करत नई ॥  
 अब कैसे निरवारि जात सखी री अङ्ग अङ्ग ही बौडि गई ।  
 विद्यापति श्री गोपाल रस फूली लगी है प्रमोद जई ॥३

—०—

ऐसे गोपाल पर तन मन धन वारौ री ।  
 नव किसोर मधुर मूरति शोभा उर धारौ री ॥१  
 अरुण तरुण नैन कमल मुख सुधा सर राजे ।  
 ब्रज जन मन हरण वेणु मधुर मधुर बाजे ॥२  
 ललित वर त्रिभंग अंग वनमाला सोहै ।  
 कुटिल केश कुसुम पाग उपमा को कोहै ॥३  
 चरण रुणित नूपुर कटि किंकिणी कल कूजे ।  
 मकराकृति कुंडल छवि युग कपोल पूजे ॥४

( नट )

जो तु अंग दुराय चली संग मेरे ।  
 मुख मौन व्रत लै अधर ओट करि दसन दामिनी प्रकट तेरे ॥१  
 तजि नूपुर ध्वनि जुद्ध घंटिका नाद सुनत खग मृग घेरे ।  
 चतुर्भुजदास स्वामिनी सिंगार चलि अब गिरिधर निकट नेरे ॥२

—

लाडिली लटकि चलत जब प्रिय सन्मुख अलवेली । लटकन में  
 मन लपट्यौ लाल कौ गजगति पगन पेली ॥ कमल फिरावत नैन  
 दुरावत रीझ रिभावत रमण सहेली । अलि गिरिधर पिय वेणी  
 गूथन कारण लेत है चम्पक बकुल गुलाब चमेली ॥२

राय गिरिधरण संग राधिका रानी । निविड वन कुंज नव शैय्या  
रची रंग मय अंग दुहु बोलत मृदु वानी ॥ नील सारी लाल  
बंचुकी गौर तन मांग मोतीन खचित सुन्दर सुठानी । अर्ध  
घूँघट ललन वदन निरखत रसिक दम्पति परस्पर प्रेम रस  
सानी ॥ लाल तन सुख पाग लटकि शिर पर रही कूलह चमकि  
भरि सेहरो वानी । पानी सों पानि गहि हृदय लावत ललन  
गोविंद प्रभु ब्रज नृपति सुरत सुख दानी ॥३

( कानरो )

स्यामा नागरि निकुंज औन किशलय दल रचित सैन कोक कला  
कुशल कुंवरि अति उदार री । सुरत रंग अंग अंग हाव भाव  
अकुटि भंग माधुरी तरंग रंग मथित कोटि मार री ॥ मुखर  
नूपुरनि सुभाव किंकिणी विचित्र राव विरमि विरमि नाथ वदत  
वर विहार री । लाडिली किसोर राजहंस हंसिनी समाज सींचत  
हरिवंश नैन सुरति सार री ॥२

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे दशमीकृष्णाक्षणादा ॥

ग्यारहवीं क्षणदा

( बिहागरो )

शची के नन्दन आज देखि में चारु । वारिज वदन सुख सदननि  
मदन कदन मानो लोचन चारु ॥ हाव हुलास वास मुख पाननि  
अधर विंव अति चारु । तिलक सुचारु अलक कल रोलनि  
कर्णन कुण्डल गंड नासा चारु ॥ भौहन सौहन मोमन गौहन  
मोहन चिवुक सुचारु । कुटिल कुंतल गुच्छ पुच्छ मोर चंद्रिका  
रचि है पुहप तामें बने अति चारु ॥ कंज करवीर माल वसन  
किंकिणी कटि गौरवरण अति चारु । नख शिखि अवलोकि अंग  
अंग पर मदन वारि डारौ जगत की चारु ॥१



( कानरो )

सुरङ्ग लटपटे पेंचनि चीरा पीताम्बर वनमाला कटि सोहें । घन  
तन स्याम कीये चन्दन खोरि ठाड़े पोरि पग पावरि कर मुख  
वीरा । गज मोतीवर द्वयलर ग्रीवा सीमाकरि मानो रूप की  
तिन मधि जगमगात द्युति हीरा ॥ सूरदास मदनमोहन देखत  
आली हों जानौं के जाने मेरौ जीरा ॥२

राग नट

इन नैनन की टेर न पाई ।

कहा करौं वरजत वे अंचल लागत ही उठि धाई ॥

वाट घाट जहां चलत मनोहर तहांऊ चलति वचाई ।

बूँघट पट जलहीन मीन सी अधिक उठत अकुलाई ॥

निलज भई कुल लाज गवांई तिनसों कहा बसाई ।

सूरदास गिरिधर बिनु देखे कछु नहिं तन मन भाई ॥३

तू सुनि कान दे'री तेरे गुन गावे स्याम कुंज भवन ।

सन्मुख होय करि तोकों आकौं भरत तेरो तन परशि आवे जो  
पवन ॥ तेरोइ ध्यान धरत उर अन्तर नैन मूँदि निकसत उरडरपत तेरोइ अगम सुनि श्रवनन । सूरदास मदनमोहन सौं  
चलि मिलि तोही तैं पायौ है नाम राधारमण ॥

( कानरो )

चल सखि मदनगोपाल बुलावे । तेरो नाम लै वेगु बजावे ॥

इह संकेत बढौं वन माहीं । सघन कदम्ब मनोहर छाहीं ॥

मिलत परम सुख आनन्द लीला । परमानन्द प्रभु भावन शीला ॥

कल्याण

आजु नीकी बनी राधिका नागरी । ब्रज युवति यूथ में रूप अरु  
चतुराई शील शृंगार गुण सबनतें आगरी ॥ कमल दक्षिण भुजा

वाम भुज अंश सखी गावती सरस मिलि मधुर सुर रागरी ।  
सकल विद्या विदित रसिक हरिवंश हित मिलत नव कुंजवर  
स्याम बड़भागरी ॥६

( विहागरी )

शोभा निरखत नैन सिरात ।

नवल जुगल की मिलन खेलन अति आनन्द अङ्ग न समात ॥  
पहिले देखि प्रिया मुख सारस विवश भये नन्दलाल ।  
लोइन मधुकर पान करत मधु मत्त मुदित तिहि काल ॥  
करि उपाह निज नैन नचाई के मुख घूँघट पट तांनि ।  
प्रिया चतुरइ पाई चकित चित अधिक भई अकुलानि ॥  
हाहा करत धरत करसौं कर परसत ही मति और ।  
नेति नेति वाणी निगमन की सफल भई तिहि ठौर ॥  
इहि विधि रंग भरे मधु पीबत जीवत जीउ जिवाई ।  
कहि न सकत मनोहर लोइन अवलोकत ललचाई ॥

( विहागरी )

पौढ़े रङ्ग महल गोविंद । राधिका संग शरद यामिनी मुदित  
पुराण चंद ॥ नाना चित्र विचित्र चित्रित कोक कोटिक फन्द ।  
निरखि निरखि विलास विलसत दंपती रस कंद ॥ मलय चन्दन  
अंग लेपन प्रेम सों आनन्द । कुसुम विजना व्यार ढोरै सजनि  
परमानंद ॥८

कानरो

वल्लवी सु कनक वल्लरी तमाल स्याम संग लागि रही अङ्ग  
अङ्ग मनहु अभिरामिनी । वदन जोति जनु मयंक अलक तिलक  
छवि कलंक छपति स्याम अंक मानो जलद दामिनी ॥ विगत  
वास हेम खंभ मानो भुजग वेणि दंड प्रिय के कंठ प्रेम पुंज  
कुंज रामिनो । शोभित हरिवंश नाथ साथ सुरत अलसवंत उरोज



कनक कलस राधिका सुनामिनी ॥

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्णएकादशीक्षणदा ॥

वारहवीं क्षणदा

॥ कान्हरो चौताला ॥

ज्यों तू दरपन में निरखि निरखि हंसत सो मैं जानी री माई ।  
तेरे रंगीले नैनन में प्राणधारे की मोहनी मूरति की भाई ॥  
हौं तो रीझ रीझ रहिरी मोपैं कछु कहि न जाइ तेरी रूप की  
लुनाई । नन्ददास प्रभु की प्यारी मोहित कछु हैरी कैसी मैं पाई ॥

॥ कान्हरो चौताला ॥

वेगि चलहु उठि गहरु करत कत निकुंज बुलावत लाल ।  
हा राधा राधिका पुकारत निरखि मदन गज टाल ॥  
करत सहाइ शरद शशि मारुत फुटि मिली उर माल ।  
दुर्गम तक्रत समर अति कातर करहि न प्रिय प्रतिपाल ॥  
हित हरिवंश चलि अति आतुर श्रवण सुनत तिहि काल ।  
ले राखे गिरि कुच बीच सुन्दर सुरत सूर वज्रलाल ॥२

( विहागरो )

हंसत खेलत बोलत मिलत देखो मैरी आखिन सुख । वीरि  
परस्पर खात खवावत ज्यों घन दामिनी चमचमात शोभा तन  
सुख ॥ श्रुतिधर राग केदारो जम्गो अर्धरात्र सुख । हरिदास के  
स्वामी स्यामा कुंजविहारी सुरत देखत मैरे भयो है परम सुख ॥  
इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्णाद्वादशीक्षणदा ॥

तेरहवीं क्षणदा

तैं सिर घाली री ठगोरी प्रिय परि ऐरी प्यारी ।  
निशिदिन तोहे जपत प्राणपति ऐरी तेरी सौं लालन गिरवरधारी ॥  
तेरे रंग रूप रसमानस राधे राधे रटत सदारी ।

२६ ]

❀ जगदागीतचिन्तामणि ❀

गोविंद प्रभु अब छांडि दियो सब कुंज विलास विहार बिहारी ॥  
( गौरी )

ललन शिर घाली री ठगोरी ।

जब लगि मुख देख्यो नहिं तब लगि भई रहत हैं बौरी ॥

वै मुख कमल पराग चाखि मैरे नैन मधुप लागी ठौरी ।

गोविंद प्रभु बनते जब ऐहैं रहत हृदय कैसे तोरी ॥२

ईमन

नैना मैरे मोपें न आवही । जब जब याई देखों हरि को वदन  
छवि तब तब न ऐसैंही ॥ रूप लालची ललचाई रहै मानो ज्यों  
विछुरे जलचर जल पावहीं । शोभा सरसी में जाई रस सौं भिलि  
मग्न मये अब सखी मौन वतरावही ॥ मुरारीदास प्रभु ऐते पर  
निठुर भये अपने ओट दुरावहीं ॥३

( विहागरो )

वृन्दावन बैठे मग जोवत बनवारी । शीतल मंद सुगंध पवन ब्रहे  
वंशीवट यमुनातट निपट निकट चारी ॥ कुंजन की लता ललित  
कुसुमन की शैय्या रचि बैठे नटनागर नव लालन गिरधारी ।  
सूरदास मदनमोहन तेरो मग जोवत चलहु बेगि दरस दीजै  
तुही प्राणप्यारी ॥४

( विहागरो )

मधुर मधुर चलति आजु कीर्ति नन्दिनी । लोचन अलि ललित  
पलक मंद मंद हलत अलक सुन्दर मुखकांति कमल चंद निदिनी ।  
सौरभ भर भरित देश नव सत करि सुमन वेश रूप हेरि अमर  
नारि चरण वंदिनी ॥ दामिनी तन जलद वसन वरषत रस  
मुखर रसन वल्लभ मन नैन कर्ण ताप कंदिनी ॥४

( कान्हरो )

नीके ह्वैने कुं निहारि धौरी ब्रजराज कुँवर की विराजनि माई ।



## ❀ क्षणदागीतचिंतामणि ❀

[ २७ ]

चंचल कुंडल चंचल लोचन चंचल पंकज माला सुहाई ॥  
 पीत भगा भलके री ता मध्य सांवरे गात की चंचलताई ।  
 नंददास मानो नवघन में सौदामिनी रहि लपटाई ॥२

विहागरो

प्यारी तेरी तन की सुन्दरता ।  
 नख शिख अङ्ग अङ्ग अवलोकि के चकित भयो करता ॥  
 अति अनूप कृश कटि अनूप सखि उर अनूप सुंदरता ।  
 छवि अनूप छन छन उपजत अनुपम उज्ज्वलता ॥  
 उपमा करत विचार विविध सखी नाहिन देखत समता ।  
 कुंभनदास की स्वामिनी तोहि बस गोवर्धन धरता ॥

( विहागरो )

हँसि मिलिवो मेरे जियतों न टरई ।  
 सहज चितै चित चोर परस्पर प्रेम वचन लै सरस सुर ढरई ॥  
 मदन मुदित घंदही वंद छोरत उर जोरत मुख पर मुख धरई ।  
 परम रुनेह रसाल लाड़िली लालहि लपटि लटकि भुज भरई ॥  
 प्यारी जू प्राणनाथ सुख विलसत श्रमजल कण वरषत मन हरई ।  
 विहारिनीदास चंचल अंचल करि इह अवसर आनंद अनुसरई ॥  
 इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे त्रयोदशी कृष्णा क्षणदा ॥

चौदहवीं क्षणदा

कानरो

सखी री आजु गिरिधरलाल पगिया धरें पेच बनाय ।  
 देखि शोभा कोटि मनमथ रहे शीश नवाय ॥  
 छांड़ि मानस मान नागरि निहारि पिय मुख जाई ।  
 चतुर्भुज प्रभु मदनमोहन लीजिये उर लाय ॥२

कानरो

खेल्यो लाल चाहत रमण ।

रचि रचि अपने हाथ सवारचो निकुंज भवन ॥१  
 रजनी सरस मद सौरभ सौ सीतल पवन ।  
 तो बिनु कुँवरि काम को वेदन मेटव कमन ॥२  
 चलहि न चपल वाल मृगनैनी तजिव भवन ।  
 हित हरिवंश मिलिव प्यारे की आरति दमन ॥३

केदारो

आगे चल प्यारी जहाँ सघन नवल निकुंज भारी ॥  
 करसों अंचल करखि गहत जहाँ सुजान सुन्दर प्यारी ।  
 जहाँ निकट सरित समीर कोकिल मार करत अखारी ॥  
 बांह जोटि रसमत्त मदगज चली तबहिं सुकुमारी ।  
 अंग अंग इनहिं छवि पर गोविंद बलि बलि हारी ॥२  
 विहागरो

विलसत राधा रमण रस सार ।

आजु भई इक नई रीत सुख सागर वारन पार ॥  
 प्रथम सवांरि सिंगार साथ नव सहचरि निरखि हुलास ।  
 वचन विलास प्रमोधा प्रिया मन धन लै चलि पिय पास ॥  
 अलक लड़ी लड़काई धरत पग जग मग लाइ गहेली ।  
 प्रीतम मुख सुख देखि चली झुकि रुकि नहिं सकति सहेली ॥  
 चकित भये पिय सघन कंप हिय जिय में केतिक बातें ।  
 परतन आह ताहे सुधि भूली चपरि चले उठि तातें ॥  
 अति आतुर आगे प्रीतम लखि मुसकत ही गहि वहियां ।  
 मधु मादकज कला गीरति पति मन्त्र मुकट माण नहियां ॥  
 प्रकट पंचशर एक ठौर करि कीनों शर सन्धान ।  
 भरे अंक परजंक चले पिय प्रेमानन्द निधान ॥  
 अरुण चरण करक्षेप निरन्तर गीम डुलनि वनीवाला ।  
 मिलि भूषण धुनि गद् गद् बोलनि सुनि सुनि स्वजन निहाला ॥



## ॐ क्षणदागीतचिंतामणि ॐ

[ २६ ]

करत ख्याल वंधे प्रणय जाल जाके भाल भाग सोई निरखे ।  
जैसे मनोहर तरल विजुल मिलि श्याम घटा रस बरखै ॥८॥

कानरो

स्याम मखतूल को फौंदा । फट्यो है कुं वारजू के कंठ बछु भ्रम  
स्वेद भेद तन मन में न समार्ति कांति बहु भांति लसत रस  
सौंदा ॥ अंग अंग आलिगन आभरण वारों कोटि मदन मद  
रौंदा । विहारिणी दासि खामिनी सेवत संतत सखी सुख  
पावत अनहौंदा ॥२॥

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्णा चतुर्दशी क्षणदा ॥

पन्द्रहवीं क्षणदा

अडानो

पहले तो देखो आई मानिनी की शोभा लाल, पाछेंते मनाइ  
लीजे प्यारे गोविंद । कर पर दे कपोल रही री नैननि मूदि कमल  
विछाय मानो सो पोहै चंद ॥ रस भरी भौंहें भारी भ्रमर अरब-  
रात इंदु तरे आयो मकरंद भरि अरविंद । नंददास प्रभु ऐसी  
काहे को रुठै ए वलि जाके मुख देखत मितत दुख द्वंद ॥२॥

केदारो

काहे को मनायो स्यामलाल बाल जोरे नहिं डीठ । मन की जो  
लखिये मुख उन बोले ऐसी तुम्हारी रीठ ॥ मैं अपनी सी बहुत  
कही सुनि सुनि उन सबैं सही बारू की बूँद तहा कहा करे  
वसीठ । सूरदास मदनमोहन अपने जाइ मनाइ लीजे जैसी बहै  
बयार तैसी ओढ़िये जु पीठ ॥२॥

केदारो

आपने चलिये जु लालन कीजिये न लाज ।

मोसी जो तुम कोटि कपट वो प्यारी न माने आज ॥

मैं तो तुम्हारी आज्ञाकारिनी मो सों कहा कहो महाराज ।

नंददास प्रभु बड़े कहि गये आप काज महाकाज ॥२

विहागरो

लाडिली न मानै लाल आप पाँव धारो । जैसे हठ तजै प्यारी  
सोई जतन बिचारो ॥ बात तो बनाय कही जेती मती मेरी ।  
नैकहू न मानै लाल ऐसी प्रिया तेरी ॥ आपने चौप के काज  
सखी भेष कीनौ । भूषण वसन साजि वीणा कर लीनौ ॥ उतर्ते  
आवत देखि चकित निहारी । कौन गांव बसति हौ रूप उजि-  
यारी ॥ करसौं जु कर जोरि निकट बैठार्ई । सप्त सुरन तान  
मिलि सुलप बजाई ॥ रीझ मोती हार चारु उर पहिरावै । हमारौ  
सांवरो भट्ट ऐसौ हौ बजावे ॥ मुख सौं मुख जोरी स्याम दर्पन  
दिखावै । निरखि छबिली छवि गर्व विसरावै ॥ जोई कछु चाही  
बलि सोई मागि लीजे । इह दान सांवरे सौं मान न कीजे ॥  
छदम उवरि आये हँसि पीठ दीनी । धाय बलि राधिका रमन  
उर लीनी ॥६

विहागरो

दोऊ वीर सन्मुख सुरत संग्राम लरत । इतहि नागरि कुँवरि  
उतहि नागर कुँवर मल्ल प्रति मल्ल अंग संग तालिम करत ॥  
अंग प्रति अंग सें निकसि भट साजि दल बलय कंकन घोख  
रोख निशान हत । खर नख वाण छूटत कवच कंचुकी सुदृढ़  
लागत उरज सर नाहि डर उरत ॥ कुंज शयनीय रथ रूढ़  
सारथि सखि गूढ़ विगलित केश चवंर ध्वज फरहरत । दशन  
तोमरस काति सूर लागत उर अधर खंडित गरुड पीक शोणित  
स्रवत ॥ बाहु युग बदननि बांधि नन्द नन्दननि राधिका पति  
आचारण विपरीत रति । रमत संग्राम भर श्रमित स्यामा जानि  
व्यास निज दासि कर कमल अंचल दुरति ॥६

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्ण पंचदशीक्षणदा ॥



❀ क्षणदागीतचिंतामणि ❀

[ ३१ ]

प्रथम क्षणदा ( शुक्ला )

राग-गौरी

जय जय शचीकुंवर विश्वंभर नागर वर । त्रिजगत पतित वि-  
लोकि कलागुरु करुणा रस सर्वस विग्रह धर ॥ निज वृंदावन  
लीला बिलसत संकीर्तन गुन ग्राम बितत कर । तान वधान मान  
अभिनव युत नृत्यत भूषण भाव रतन धर ॥ चंचल चरन वरण  
गोरोचन लोचन चारिज चारि प्रणय ढर । धीरज विरहित रहित  
परापर उमगत उर अकुलात धरत गर ॥ मिलि सहचरगण रस  
आस्वादन प्रेम मगन कीने है थिरचर । या मधि हेतु न कहत  
अपराधी वंचित होत सुदीन मनोहर ॥४

( कल्याण )

मोहन मुखारविंद पर मनमथ कोटि वारों री माई ।  
जिहि जिहि अंगनि दृष्टि परत है तिहि तिहि रहत लुभाई ॥  
अलक तिलक कुंडल कपोल की छवि इक रसना मोपै बरनि नहि  
जाइ । गोविंद प्रभु की चार्निक पर बलि रसिक चूड़ामनि राई ॥२

ईमन

अब मेरे नैननि वान परी ।

सब सुख सदन बदन देखे विनु रहत न एक घरी ॥

जिनकै लिये लोक निंद । सब मैं ले दूर धरी ।

ज्यों ज्यों माल पिता मोहे त्रासत त्यों त्यों चौप खरी ॥

रही मौन धरि बोल न आवे आनंद उमगि अरी ।

सूरदास रस रंग भरे तैं इक टक तैं न टरी ॥३

ईमन

कहा करेगो कोऊ मेरो ।

हों तो अपने ते नहि टरिहों जग उपहास करो बहुतेरो ॥

कोऊ आगे कोऊ पीछे कोऊ सुनाय सुनाय बडेरो ।

ऐसी कबहुँ मति बुधि नाही हरि संग छाड़ि करों पुनि फेरो ॥  
 अब तो जिय ऐसी बनि आई स्याम सिंधु में कियो बसेरो ।  
 जिहि रंग सूर रंग्यो मन मेरो बहुरि न फिरै तनक तन फेरो ॥४

( धनाश्री )

स्यामा तूँ अति स्यामहि भावे ।  
 बैठत उठत चलत गोचारत तेरी लीला गावे ॥  
 पीते पीतवसन भूषण सजि पीत धातु अंग लावे ।  
 चंद्राननि सुनि मौर चंद्रिका शीशहि मुकुट बनावे ॥  
 अति आसक्त दरस संभ्रम मिलि अंग अंग सचु पावे ।  
 विछुरत तोहि कवासि राधे कहि कुंज कुंज प्रति धावे ॥  
 तेरोई चित्र करे अरु निरखे वासर विरह नसावे ।  
 सूरदास रस रासि रसिक सों अंतर क्यों करि आवे ॥४

( मारु )

घूँघट पट लटक अलक चटक मटक भ्रुकुटि भंगी ।  
 नैन नचन चैन हरत नैन नटन रंगी ॥  
 राधा अभिसार रसिक सेखर रंगराती ।  
 निरखत सुख सदन वदन अंखियां अरु भांती ॥  
 त्वरित चरित चकित चित्र मोद मत्त सोहै ।  
 करि सिंगार पुलकित तन परिजन मन मोहे ॥  
 मंद मंद चरण धरन चितवत चहुँ ओरी ।  
 चलत हलत चमक अंग उपमा कहि कोरी ॥  
 कर उत्तंग गुरु नितंब प्रणय भार भारी ।  
 भ्रम जल कन निरवारत पवन मलय चारी ॥  
 द्विरद चाल लालन लखि बालन द्विग आये ।  
 हिय हुलास मुसकि मिलनि मनोहर मन भाये ॥६

—०—



## विहागरो

कहा व्रत है हरि मन को हरण मृग नैनो मन हरि लीयो । अलक  
फंद मुखचंद सुधा पर सहज माधुरी मोहिनी नेकु चितै आधीन  
कियो ॥ नवल किसोरी दिनन की थोरी भोरी वत वनि भोर  
यो सब विधि रूप गुण तोही कों दीयो । जादो प्रभु मोहन की  
जीवनि नेकु न विसरत न्यारी होत छीन धरके दियो ॥२

## विहागरो

विलसत प्यारी लाल कुंज रजनी । वदन बदन जोरि मदन  
लरावत नूपुर के सुर मिलि वलय की वजनी ॥ पुलकि पुलकि  
तन आनन्द मगन मन मधुरीम वचन श्रवन सुनि सजनी ।  
विठल विपुल रस रसिक विहारी वश नव त्रय तिलक सुरत  
जिति गजनी ॥२

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला प्रथम क्षणदा ॥

## द्वितीया क्षणदा

( कानरो )

जबतें देख्यो मैं गौर किशोर ।  
तबतें भूलि अपन पौर हि जानत नहिं किहि ठौर ॥  
जासों अधिकहु तो मन मेरो तासों भयो उदास ।  
लोइन स्रवत गात अति पुलकित लैलै जियो उदास ॥  
बूझि न परत कहां होनों है निसि वासर नहिं चैन ।  
पूछौं तोहि मनोहर हूँ भइ कहा गहेली अैन ॥३

( नट )

रूप देखि नैना पलक लगे नहीं ।  
गोवर्धन धर अङ्ग अङ्ग प्रति दृष्टि परत चित हरत तहीं ॥  
कहारी करौं कछु कहत न आवै चित चोरचो मांगी पीवें दही ।  
कुंभनदास गिरिधरन मिलन की सुंदर बात सखियन सों कहीं ॥२

( नट )

नैना मेरे घूँघट में न समात ।

सुंदर वंदन नंद नंदन को निरखत मन न अघात ।

अति रस लुब्ध महा मधु लंपट जानत न एको वात ।

कहा भयो दरसन सुख मानें ओट भये अकुलात ॥

वार वार वरजत हौं हारी तौऊ टेक न जात ।

सूर रसिक गिरिधर बिन देखें पलक कलप सम जात ॥३

कल्याण

यातें हौं कहत करण केलि । सुनिरी सखी तेरे तन मण्डप बौँडी  
 योवन बेलि ॥ प्रीति कुसुम आनंद मकरंद ही रही आली अति  
 भेलि । गदाधर प्रभु अंग संग सुफल फलित सखि सुमुखि सहेली ॥

कल्याण

चलि सुंदरि बोली बृंदावन । कामिनि कंठ लागी किनि राजहि  
 तू दामिनि मोहन नूतन धन ॥ कंचुकी सुरंग विविध रंगसारी  
 नखयुग ऊन बने तेरे तन । ये सब उचित नवल मोहन कों श्री-  
 फल कुच जोवन आगम धन ॥ अतिशय प्रीति देती अंतरगति  
 हित हरिवंश चली मुकुलित मन । निविड़ निकुंज मिले रस  
 सागर जीते सान रतिराज सुरतरण ॥३

—०—

प्यारी तेरे लोचन अति ही लोने ।

रस के आल वाल रंगीले विसाल ऐसे भये न होने ॥

अति ही रिझोने जब मुखकि चलात कोने को हेरि टक ठोने ।

नंददास नंदनंदन के नैनते नाहिन नैकहु ऊने ॥६

—

विपिन धन कुंज रति केलि भुज मेलि रुचि स्याम स्यामा मिले  
 शरद की जामिनी । हृदय अति फूल समतूल पियनागरी, करिणी



कर मत्त मन विविध गुण रामिनी ॥ करत रसहास परिहास  
आवेस वस दलित दल मदन बल कोक रस कामिनी । सुहित  
हरिवंश सुनि सुनि लाल लावन भिदे प्रिया अति सूर सुख सुरति  
संप्रामिनी ॥७

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे 'शुक्ला द्वितीया क्षणदा ॥

### तृतीया क्षणदा

कानरो

ब्रज की खोरि सांकरी । जित तित होत अचानक भेट हूँ सकुचा  
उलट्यो चाहत री ॥ जित तित हौँ मग रोकत टोकत डगर तजति  
पग गइत कांकरी । ज्यों ज्यों हौँ सब अंग दुरावति, त्यों त्यों  
चिवुक गहि आयो घांकरी ॥ सूरदास मदनमोहन जेतो कीयो  
बोलन को तौऊ में न हांकरी ॥२

कानरो

आजु मिले पिय सांकरी गली । मदनमोहन पिय डारी मो तन  
चंपकली ॥ वारिज कदन देखि विथकित भई, घूँघट में न समात  
नैन अली । गोविंद प्रभु पिय प्यारी परस्पर रहे अनुराग दली ॥२

कानरो

चलि सखि बहुरि गोपाल मिलावों ।

तू मन मांहि बहुत पछतावति सो फल पुनहि फलावो ॥

करहु सिंगार गहरु अब छांड़ह नातर मदन बुलावों ।

वल्लभ रूप मोहिनी पढ़ि कै धैरज लाज गलावों ॥२

कानरो

देखि सखि राधा अभिसार ।

अति अनुराग भरे उर अंतर वाहिर रतनन भूषण भार ॥

सहचरि साथ बात कछु न करत डरत लोक लाज विस्तार ।

वल्लभ मिलन मनोरथ बहुविधि मनहि विचारत वार न पार ॥२

## कान्हरो इकताल

गहवर गिरि साँकरी गली । रही न सँभार देह सुधि विसरी  
मिलि औँचक वृषभानु लली ॥ दक्षिण कर गैदुक सुमनन की  
वाम अंश भुज सुहृद अली । अंचल डारि आधे सिरँछवि सौँ  
मत्त द्विरदगति आवत चली ॥ गुण प्रयोग सहचरी संभरावति  
हृदय रूप मूरछा जु सली । नागरीदास मिटाय ललक रति मिलत  
उरज उर गाँत बदली ॥६

## विहागरो चौताल

हौँ बलि जाऊँ नागरी श्याम ।  
ऐसे ही रंग करौ निसि वासर वृंदाविपिन कुटी अभिराम ॥  
हास विलास सुरति रस सींचत पशुपति दग्ध जिवावत काम ।  
हित हरिवंश लोल लोचन अलि कहँहुँन सफल सकल सुखधाम ॥  
इति श्रीगीतचिंतामणी पश्चिमविभागे शुक्ला तृतीया क्षणदा ॥

## चतुर्थी क्षणदा

## राग कानरो इकताला

जै जै नर्दया नगर विहारी ।  
सुंदर श्याम वाँम सुख अनुभव हेतु ज्यौ गौरवपु धारी ॥  
कृष्ण नाम वर रहत मंद स्वर गद्गद् रोकत बानी ।  
लोचन अरुण प्रवाह रोकि मानों छाड़्यौ है पानी ॥  
पुलकित कंपित तामधि हुंकृत तुंगित भाव अनंत ।  
विरह जलधि जल मानौ अपने बल कूदि परे गुणवंत ॥  
कबहुँ न सुन्यौ नैन नहि देख्यौ ऐसो भाव विलास ।  
समझ न सकत तौऊ फिरि वरनत निलज मनोहरदास ॥१

— — —

हेलि कौन एक सुन्दर सांवरौ इत ह्वै आवै जाय ।  
ज्यों ज्यों आखिन देखि ये त्यों त्यों जिय ललचाय ॥



## ॐ ऋणदागीतचिंतामणि ॐ

। ३७

वदन मदन मन मोहनारी हेली घूँघर वारे केस ।  
 मोहन मूरति माधुरी नित मनोहारी वेस ॥  
 सदन वरुणि हियो वेधि योरि हेलि योवन मद छकै नैन ।  
 रूप ठगोरी मोहि लागी बिनु देखें नहिँ चैन ॥  
 धीरज हरण बड़ेडी भुजा हेली मद गजराज की चाल ।  
 उर देखें ज्यों आवही हूँ रहोय वनमाल ॥  
 विसराये विसरे नहीं मन हरि मन रह्यो भोय ।  
 रामराय पिय सों रमें भगवान सखी सोय ॥

नवल लाल के शीश पर चंद्रिकारी ब्रजजन मोहे ।  
 पीतांबर अति रंग भरथो है जगमगाति छवि सोहे ॥  
 निरखत ही चक्रचौधी लागत मनमथ कौ मन मोहे ।  
 हरिनारायण स्यामदास के प्रभु छवि निरखत जो न डिंगे सो कोहे ॥  
 ( केदारो )

राधे देख नव निकुंज नायक रसिक गिरवर धरण ।  
 सकल अंग सुकुमार सुंदर सुभग साँवर धरण ॥  
 सहज नटवर वेस दरसन नैन सीतल करन ।  
 कर सरोज उरोज परसत युवति जन मन हरण ॥  
 वेगि चलि मिलि गुन निधानहि साज पट आभरण ।  
 चतुर्भुज प्रभु नवरंग नायक सुरति सागर तरण ॥

(विहागरो) रूप कल्याण  
 सोभित हाथन चारि चारि चूरियाँ । जाँवुनद जवा निके तापिते  
 रवानिके आन भाँति फंदवनि बहु छवि जुरियाँ ॥ दशन वसन  
 ज्योति लसत नासिका मोति नयन बने मानो कमल पखुरिया ।  
 चम्पक वरन तन पहिरे कुसुंभि सारी पिय पै गमन कीनौ नवल  
 बहुरियाँ ॥ कुच जो कठिन बाल विलुलित उर माल तापर अल-  
 कावलि यों विथुरियाँ । मानहुँ कंचन घट जानि आये तट सुभग

भुजंगिनी चली उत मुरियाँ ॥ वय संधि जुटि मुठि मापन कटी  
त्रिवली देख मानौ विध की अंगुरिया । नूपुर रुनभुन कूजित  
कलरव राजहंस गति चलत मधुरिया ॥ पद जो पल्लव वर मानो  
री दुगुन सर मन मथ तरकस युगल पिंडुरिया । श्री गोपाल  
प्राण प्यारी विद्या राधे सुकुमारी रूप जोति जगमग सखी  
चहुँ ओरियाँ ॥

( कानरो )

भीनों भगा सोंधे भीने छूटे वंद लपटि रह्यो त्याम अंगनि सों ।  
कटि धोती सोहती छवि सों ठाढ़ेरी ललित त्रिभंगनि सों ॥  
लाल पीत पाग पर पुहप गुच्छ ढिग मोर पुच्छ वनि अति  
रंगिनि सों ॥ कर मुरली उर माल मालती सोहे गोवर्धनेश  
चपल दृगन भुवंगनि सों ॥२

( विहागरो )

उर मुख पियरी पर आई प्रस्वेद कन ऐसी नीकी लागें हीराकन  
कुंदन मध्य खची । आधि पल आधी अखियन चितवत अर्ध-  
खिली कमल कली भँवर भार लची ॥ धर धरात छतिया उसास  
उसासनि मानो चक्रवाक पोत जोति तरंगनि उगची । जननाथ  
कधिराय के प्रभु जब अंक भरि लीनि प्यारी चपल भई मानों  
घन में दामिनि कांति पांति नची ॥७

( विहागरो ) एकताल

आज वन क्रीडत मदन गोपाल ।  
मुख सों मुख उरसों उर जोरत चपल होत ब्रजवाल ॥  
अधर कपोल नैन युग चुंवन मनमथ नटन विशाल ।  
मानहु प्रिया नव कनक जुही मिलि वल्लभ लसत तमाल ॥  
इति गीतचिन्तामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला चतुर्थी क्षणदा



## पंचमी क्षणदा

(नट राग) चौताल

काकौ काकौ मुख माई वातन कौं गहिये । एक की पाँच लगावे  
 दूत होइ झुठि सुनावे तनक जो साँची होइ तो सब सहिये ॥१  
 घर घर एही चवावो ब्रज में मोही सों बैर सुनि सुनि श्रवननि  
 दुख दहिये । प्रभु मेरे सूरदास सिर परी सब उपहास मदन  
 मोहन मिलै तो सच लहिये ॥२

चात हिलग की कासों कहिये । सुनिरी सखी व्यथा एह मन की  
 समझि समझि हिये चुप कर रहिये ॥ मरमी बिना मरम को  
 जाने इह विचार अपने जिय सहिये । कुंभनदास गिरिधरण  
 मिले जब तबही सब सचु लहिये ॥१

अंग अंग की वानिक मोपे कहि न परें काम को मद हरे  
 भ्रकुटि भंग । त्रिभुवन सोभा वारि डारौं एक रोम पर उपमा  
 सब डोलत लागी संग ॥ जिहि अंग दृष्टि जाय रही जु तिहि  
 लुभाय नैन नैन गति भूली भई जु अपंग । सूरदास मदनमोहन  
 पिय सोभा सिंधु पारें न पार छवि के तरंग ॥२

(कल्याण)

रखे मेरे रहत नहीं अधिक चपल ये नैन ।  
 धावत तकत स्याम मुख अंबुज मानौ मधुप मधु चाहत लैन ॥  
 भौं कुंचित धरै लाल चहुँदिशि फिरें नाचत अनेक नचावत नैन ।  
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधर वस कीने सखि गूढ़ भाव की सैन ॥२

कान्हरो इकताल

गोरी राधा प्यारी पहिरे स्वेत साड़ी जुन्हइया तोहे अति होइ  
 परी । बचन गात आभूषण पहिरे मुक्ता किरण मिलि छवि

पसरि ॥ जगमगात चक्रचौंवी सी लागत एक रसना मोपै कहि  
आवत नरी । जगन्नाथ कविराय के प्रभु फूलन की शैया रची  
चलिये मिलिये करिये रस रंग रली ॥ २

( राग विहागरो )

नव निकुंज नव भूमि रगमगी । नव भूषण नव रंग विराजत  
नवल बदन पर अलक सगवगी ॥ नव सत सजि सिंगार सुभग  
तन नवल शरद की जोन्ह जगमगी । धौठल विपुल विहारी के  
लाडिली खेलह सहज उर लगी ॥ १

आज रस सागर दोऊ विराजत । मिलतहि नैन बदन विधु  
भामिनि कर अंबरनि दुरावत ॥ लाल चकोर हा हा अति आकुल  
तनक नतौंदर सोवति ॥ सहचरि पाँय परत तब बल्लभ जिय  
रसिकननि जियावति ॥ २

( विहागरो )

रंग भरे लाल रंगीली प्यारी राधा ।

एक तन एक मन एकहि समान दौऊ नैकहुँ न न्यारे होय सकत  
पल आधा ॥ छवि सों छवीली भाँति नैनन में मुसकाति मुस-  
कनि में रंग बह्यौ है अगाधा । तैसी है नवल सखी तैसो है  
कुंज बिहारी जीयौ मेरी प्राण प्यारी पूजी मन साधा ॥ २

॥ इति गीतचिंतामणौ शुक्ला पंचमी क्षणदा ॥

षष्ठी क्षणदा

( राग विहागरो )

इह डोटा हठि हरत परायो मन । देखत रूप ठगौरी सी लागी  
जगत विमोहत श्याम बरण ॥ तन दिन दिन चौप चौगुनी बाढ़ी  
पावस रितु मानो नूतन घन । दामिनी कोटि पीतांबर छवि पर  
परमानंद राजत वृंदावन ॥ २

कमल मुख देखत कौन अघाय । सुनिरी सखी लोचन अलि मेरे



मुदित रहे अरुभाय ॥ शोभित मुकुता दाम श्याम उर मानहुँ  
वन फूलि जाइ । गोवर्द्धन धर अंग अंग पर कृष्णदास बलि  
जाई ॥ २

(विहागरो)

सखि देख चंदवा मोर के ।

आजु बने शिर शांवरे पिय के पीत छवीले छोर के ॥

पुनि लखि ललित सलोने होने लोइन नंदकिशोर के ।

वाँकी चितवन चलति तिरीछे छेदक उरके ओर के ॥

बार बार भ्रुव कुटिल होत जब गावत राग मरोर के ।

मानो पंख संवारत बैठे पंकज पर अलि भोर के ॥

मुख पर कल्लुक अमी निधि माई मोहन चित के चोर के :

नददास मेरे नैन भये तहाँ वारिधि मीनहि लोर के ॥ ४

—ॐ०ॐ—

तूँ धनि काम की वेलि,

अंकुर कटाक्ष पल्लव पहुप तेरे हँमनि ।

श्याम तमाल लाल सों तन में लिपटि गसी प्रेम गसनि ॥

चंचल दृष्टि भ्रूकोरनि मोरनि अंग अंग लसनि ।

इह छवि निरखि बनवारी के प्रभु गुण की तो में वसनि ॥

( कल्याण )

राधिका रमण पै गमन प्यारी ।

सरस सिंगार सितहार चोली चमकि चरचि चंदन पहिरि स्वेत

सारी ॥ चंद्र किरणावली अमल अतिशय खिली तरुणि तामें

मिली चरण धारी । चलति गति चपल मति चकित चार्हाति

चतुर चौगुणी चौप डग भरति भारी ॥ करत अर्गाणत मनो-

रथ मिलन ललन सों हृदे प्रिय प्रेम मद मुदितकारी ॥ प्रणय

नय सुघर सखि अंस भुज गहि झुकति रसिक सिर रतन गुण

कथनहारी ॥ ३ ॥ युगल सौरभ खरी मनहु निज सहचरी उभय  
आगे करी सुधि बिसारी । अतुल ललचाइ लोचन दरल पर  
सपर मनहि मन हरण तन अपन वारी ॥ ४

( विहागरो )

मंजुल कल कुंज देस राधा हरि विशद वेस, राका नभ कुमुद  
बन्धु शरद जामिनी ॥ शौबल दुति कनक अंग विहरत मिलि  
एक संग नीरद मणि नील मध्य लसत दामिनी ॥ १ ॥ अरुण पीत  
नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल सौरभ युत शीत आनिल मंद  
गामिनी । किरलय दल रचित सैन बोलत प्रिय चाटु वचन मान  
सहित प्रतिपद प्रतिकूल कामिनी ॥ २ ॥ मोहन मन मथ सभार  
परसत कुच नीवि हार वेपथु युत नेति नेति वदति भामिनी ॥  
नर वाहन प्रभु सुकेलि बहु विधि भर भरित झेलि सौरत रस रूप  
नदी जगत पाविनी ॥ ३ ॥

( विहागरो )

पोढे राधिका उर लाय । नव सद नव निकुंज शैय्या नव चतुर  
दोऊ राय । गान करति ब्रजनारि द्वारे सरस राग जमाय ॥ चल  
वारि गिरिधरन को मुख रह्यो मन लपटाय ॥ २

( विहागरो )

फूलन के महल फूलन की शैय्या फूलन की चौखडी फूलन की  
तिवारी । फूले से वदन देखि फूले हैं कमल नैन फूली बात कहत  
पिय प्यारी ॥ फूलन के सुख केलि फूलन के हार हमेलि फूल सी  
छिरकी रही निशि उजियारी । फूली हैं सखीजन प्रेमे फूल्यौ  
तन मन रामराय फूले हैं निरखि गिरिधारी ॥ २

॥ इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला पट्टी क्षणदा ॥



## सप्तमी क्षणदा

कल्याण

मोहन वदन की शोभा ।

जाहि निरखत उठत मन आनंद कि गोभा ॥

भौंह सोहन कहा कहौ छवि भाल कुम कुम विंदु ।

स्याम वादर रेख पर मानौ अब ही उग्यो इंदु ॥१

ललित लोल कपोल कुण्डल मधुर मकराकार ।

जुगल ससि सौदामिनी मानों नचत नट चट सार ॥२

वंसिका कलहंसिका मुख कमल रस राची ।

पवन परसत अलक अलिकुल कलह सी मांची ॥३

नैन धीर अधीर कछु कछु असित सित राते ।

प्रिया आनन चंद्रिका मधु पान रस माते ॥४

विमल सजल सुदार मुक्ता नासिका दीयो ।

उच्च आसन पर असुर गुरु उदो सौ कीयो ॥५

लाग्यो मन ललचाय तासों टरत नाहि टारचौ ।

अमित अद्भुत माधुरी पर गदाधर वारचौ ॥६

विहागरो

अरी मन गह्यो स्याम सलोने रूप में अंग अंग रंगनि भरचो ।

ऐसो लटू है लटक्यो तामें फेर न मटक्यो अनेक जतन मैं

करचौ ॥१॥ ज्यों ज्यों ऐंच्यो त्यों त्यों अधिक मगन भई नाहि

न जात कह्यो । नंददास तामें तु सीख दैरी आली कैसे कै निक-

सत कुंजर चहल परचौ ॥३

विहागरो

तेरे ही रंग रंग्यो महमोहन और कछु न सुहाय ।

चित वित चोरि लियोरी लालन को रूप निरखि अघाय ॥

चंद चक्रोर थकित ज्यों नागर रूप सिंधु मन जाय ।

नैन सों नैन मिलेरी प्राण सों प्राण रहे अरुभाय ॥

अति रस मत्त माधुरी भीने उमगि उमगि गुण गाय ।  
श्री दामोदर हित अद्भुत विलसो सदा रहो चित लाय ॥३

( कल्याण )

राधिका अभिसरति विपिन कुंजे । बहु कुसुम वेश वानि कुटिल  
घन केश गनि लसत सीमंत अति किरण पुंजे ॥ सतत गुरुलोक  
डर चकित आकों भरत पथ विपथ देखत न सखिन सगे । मदन  
मद नृत्य रस मगन चितवित वश रभस हरिवल्लभ प्रणय रगे ॥२

( विहागरो )

स्यामा प्यारो आगे चलि आगे गहवर वन भीतर जहां बोले  
कोयल री । अतिहि विचित्र पुष्प पत्रन की सेज्या रची रुचिर  
संवारी तहां तुम सोय लरी ॥ घरी घरी पल पल तेही कहानी  
तू वा मग जाय लरी । हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी  
काम रस भोइलरी ॥

( विहागरो )

कुसुमसर आज नवराज पाये । सुनत नूपुर सुर सु रसिकभणि  
भयो विवस निकसि नव कुंज तें निकट आये ॥ नैन नैनहि  
मिलत भुकि रमणि कछु फिरत वाम कर अंचलनि मुख दुराये ।  
खोलि घूँ घट बलनि बदन विधु भलमलनि मगन हरिवल्लभ  
प्रमद पाये ॥७

( विहागरो )

नव किसोरी अंग संग नव किसोर राजें । अरस परस करत  
केलि रति रस तन मनहि भेलि बलय नूपुर किंकिणी सुर मधुर  
मधुर वाजे ॥ वचन रचन करत ख्याल टूटत मणि पुहप माल  
जगमगात गौर स्याम दामिनी घन लाजे । विविमुख शशि विशद  
हास प्रेम मगन गिरत वास जगन्नाथ किये सनाथ निरखत  
दुख भाजे ॥

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला सप्तमी क्षणदा ॥



## अष्टमी जगदा

( भीमपलाशी )

हांतो भई बाढरी मनमोहन बेगि मिलावरी भूल्यो सब सुख  
 चावोरी वन वाजे वंशी बोलत मदनगोपाल । सजनी देखे कुंज-  
 विहारी कों नवनागरवर गिरिधारी को सुखसागर पिय वनवारी  
 संग खेलें आली ह्वै विहरें वनमाल ॥ मोहन मूरति मोहिनी  
 अलकें घूँघरवारी सोहनी वै अखिया ललित लगोहनी रस प्रेम  
 चखीली मदमाती छवि लाल ॥ नासा मोती झलक सोहावनी  
 रुचि वेदी भाल रिझावनी पिय बोलनी समुझ्यो गावनी सुनिकें  
 सच पावें तिनमें अर्थ रसाल । आई सब ब्रज भामिनी धाई घन  
 ज्यों भामिनी विवि मलि मिली गज गामिनी वंशीवट नियरे  
 निरखैं नैन विसाल ॥ हिलिमिलि अंसनि भुज दीने हस्तक भेद  
 अरप कीने समताल परण पर मनदीने श्री राधामोहन नृत्यत  
 भधुरी चाल ॥३॥ द्रुमवेली दरसें सरसें देववधू सुख कों तरसें  
 सब ब्रह्मादिक फूलनि बरसें गुण भेदन गावें रस बाढ्यो तिहि  
 काल । चक्रचौं धी दृग लागहीं वै मुरछि मनमथ जागही लखि  
 सदानंद रस पागही थिर चर गति पलटी नाहि न होत संभाल ॥४॥

## कानड़ी

हरि रास करें हरि रास करें । श्रीराधा संग हां नृत्यति तांडव  
 गति अब घरयत नूपुर स्वर उचरें ॥ भं भं भं भं भं भं भं भं  
 भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं  
 वाजत वेणु धुनि मुरली अधर धरें । धीं धीं धीं धीं धीं धीं  
 ध्रु मकट ध्रुम कट धी धी धीना मंडल परण परें ॥२॥ लटक  
 चलति सन्मुख होय आवत दीये भुजा गरें । सदानंद प्रभु की  
 छवि निरखत मनमथ मान हरें ॥३॥

—०—

## विहागरो

रन्धो रास मंडल कुंवर किसोरी देखति मो मति भोरी ।  
 आपने नाचत नचावत स्यामै ऐसी राधा गोरी ॥१॥  
 मुकट कि लटकन पगकि चटकनि विच मुरली धुनि वाजत थोरी ।  
 अंक भरे मनहरत परस्पर मृदु मुसकानि मुख मोरी ॥  
 आप आप में हरपि परस्पर करत चितै चितै दोउ जोरी ।  
 इह छवि निरखत सील चंद्र बलि रीझ रीझ तृण तोरी ॥३॥

## विहागरो

कुंज महल के आंगन डोलें वाँहा जोटी ।  
 कबहुँक चंद कबहुँ प्यारी तन निरखि रहत पुन डग भरें छोटी ॥  
 कबहुँक कुसुम वीनत कलि मोटी मोटी ।  
 हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी गुहि गुहि बांधे चोटी ॥२॥

## विहागरो

हँसत खेलत सुख पावत भावत मेरे मनमोहन जोरी । यही रहौं  
 आखिन आगोरी सजनी पलक ओट जिन होउ कबहुँ छिन छिन  
 नवल किसोर किसोरी ॥ नव मरकत द्युति श्याम सलोनो कंचन  
 कांति राधिका प्यारी । परमानंद उमगि दोउ प्रीतम केलि करहु  
 चितव मैरी ओरी ॥२॥

अध लगी पलकें छवीली छूटी अलकें श्रम विंदु भलकें  
 कपोल उर भालकें । मुख में उसास भरै कुच दोउ थर हरें पिय  
 के हिय में परें मोती कंठ मालकें ॥ कहत कवि मण्डन रसन  
 रुनभुन भुक्त लचकत लांक कच विथुरत बालकें । इत उत मांग  
 फूत फैलत विछोन्न पर तरल तरौना ये खिलौना काम लालकें ॥२॥  
 इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला अष्टमी क्षणदा ॥

## नवमी क्षणदा

राधिका रमण की मुरलिका श्रवण सुनि भवन सब काज तजि



गमन क्रियो भामिनी । नाद रस विवश भई आन गति छूटि  
गई विपिन आतुर चली रूप अभिरामिनी ॥ निकट पिय के गई  
रसिक कर गहि लई स्याम घन गिरिधरण युवति सौदामिनी ।  
करत यामिनी केलि कंठ भुज हठ मेलि चतुर संग चतुरभुजदास  
की स्वामिनी ॥२

—०—

कुंज महल में हैं ललना रस भरे बैठे संग पियारी । रुचिर चारु  
कमनीय वदन परि मृगमद तिलक संवारी ॥ घनचय चिकुर  
विथुरि नाना रंग गूथत चंपक वकुल गुलाब नियारी । गोविंद  
प्रभु रस बस कीने वृषभानु दुलारो प्यारे मदनमोहन गिरिधारी ॥  
इकताला

चलो किनि देखैरी देखें खरे दोउ कुंज की परछाहीं । एक भुजा  
गहि डारि समै कुंज की एक भुजा गलवांही ॥ छवि सो छवीली  
रहि लपटिलटकि मानो कनक बेलि चल तरु तमाल अरु झाड़ी ।  
श्री दामोदर हित प्रिया सों करत बात अद्भुत बिलसौ रंगे  
प्रेम रंग माही ॥२

केदारो

शरद उजियारी नीकी लागें । निकसि कुंजतें ठाड़े वरण वरण  
कुसुमन के आभूषण और सोंधे भीने वागे ॥ अति अनुराग  
भरे पिय प्यारी गावत केदारों रागे । हित भगवान आजु तृण  
दूष्टत कछु रजनी दीउ जागे ॥२

केदारो

रास में रस भरी राधिका आवें । बाहु पिय अंस धरि हंसगति  
कनक कुच घटवती रसिक कर भावें ॥ तिरप तांडव लास्य उरप  
सुलपनि भेद नृत्यती प्रिय संग मधुर कल गावें । लोल कटि देश  
मुखरित रतन मेखला नुपुरा कुणित वर हस्तक दिखावै ॥ चपल

जुग भोंह नैन मृदु मृदुल मुसकावनी गुण रासि प्राणपति  
मोद उपजावे । वृषभानुनंदिनी गिरिधरण नंदसुत चरण युग  
रेणु कृष्णदास तहां पावे ॥३

विहागरो

नृत्यत रास रसिक नव रंगी ।

अधर सुधारस मधुर मनोहर मुरली तान तरंगी ॥

नव नव अंग अंग नव नव रस नटवर ललित त्रिभंगी ।

मुरारि प्राणपति रतिरस लंपट रसवस राधा संगी ॥२

विहागरो

देखो माई नाचत नटवर नागर ।

वीन लिये कर ललिता गावति श्याम मुरलि रस आगर ॥

अंग अंग त्रिभंगिम रंगीम नटन अनी को सागर ।

मुरारी प्राणपति यौवन रतननि गहक रसिक सदां हक ॥२

विहागरो

मोहन मोहिनी के संग ।

संगीत निपुन रास रस लंपट नृत्यत मधुर सुधंग ॥

चितवत सुन्दर वदन परस्पर उमग्यो प्रेम तरंग ।

मुरारि प्राणपति द्वे द्वे निरखत वाढ्यो नव रस रंग ॥२

विरागरो

आजु देखो वृन्दावन के भूप ।

प्रिया अंस भुज राजत कोटिक मदन मनोहर रूप ॥

प्रविशत निभृत निकुंज सखीगण विरचित सुमन सुवेश ॥

पनस रसाल करक रंभादिक रस मधुपान विशेष ॥१

परिजन करत वीजन पद सेवन रति सुख शयन निकेत ।

खपुर कपूर सुरभि वीरी दौड मुख पंकज में देत ॥

बिनु अपराध दौऊ पर जब सर हानत मनमथ राजे ॥



ता कारण दौड विवश अंग अवलोकि सखी सब भाजे ॥

जानी फौज चढ़ी मनमथ की किकणी वाद्य विलासे ।

लूटत वसन भूषण मुक्तावलि बाँधि दोउ भुज पाशे ॥

उरनखघात अधर दंशित दोउ वदन उसास भरे ।

हरिचल्लभ आली दुरि हेरत लता जाल विवरे ॥७

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला नवमी क्षणदा ॥

### दशमी क्षणदा

(कल्याण)

रास मंडल बने नृत्य नीकी बनी । गौर गोविंद के नैन अरविंद  
साँ छूटत आनंद मकरंद चहुँदिशि धनी ॥ ताल वश मृदु चरण  
धरण धरिणी हुलसि विलसि हस्तक भेद चलनि लोइन अनी ।  
पुलक आपाद घन कंप भर थर हरण परत प्रस्वेद सुरभेद  
भारी बनी ॥ असित सित आरकत धरत जड़ता जबहिं तबहिं  
ठाड़े रहत गहत वानिक फनी । निपट अवसन्न जब तबहिं खिति  
धुकि परत अंगनहिं हलत गति स्वासकी निगमनी ॥ ता समै  
जगत में जीव जेतिक वसत प्रेम आनंद के होत सगरे धनी ।  
चकित सब पारिषद सबद मुखमे मिल्यो लगी टकटकी एह सुख  
मनोहर भनी ॥

(कल्याण)

मोहन मुख वेणु बाजे मंद मंदकल ।

वाम कुंडल वाम भुज धरें नृत्यत भ्रुव अतिचपल ॥

मोहित विमान बनिता खसत नीवि सुध्यो नहिं अंचल ।

गोविंद प्रभु के तरुण मदमाते विघूर्णित लोचन युगल ॥२

(केदारो)

सुनि धुनि मुरली वन बाजे हरि रास रच्यो । कुंज कुंज द्रुम

बेलि प्रफुल्लित मंडल कंचन मणिन खच्यो । नृत्यत युगल  
 किसोर युवति जन मन मिलि राम केदार मच्यो । हरिदास के  
 स्वामी श्यामा कुंजबिहारी नीके आजु गोपाल नच्यो ॥

( बिहागरो )

लाल लट कंता जौवन मद मंता खेलत रास अनंता । यमुना तीर  
 भीर युवतिन के बाहु जोरि मंडली बनाय मध्य राधिका कंता ॥  
 एकनिके जुग कुचकपोल परसत परिरंभन देतह संता । किसोरदास  
 के प्रभु कुंजबिहारी बिहारिणि के संग इहि विधि केलि करंता ॥१

( कल्याण )

आजु मोहन रची रास रस मंडली । उदित पूरण निशानाथ निर्मल  
 दिशा देखि दिनकरसुता सुभग पुलिन स्थली ॥ बीच हरि बीच  
 हरिणान्ति माला बनी तरल तारिछ मनौ कनक कदली रली ।  
 पवनवश चपल दल डुलनिसी देखियत चारु हस्तक भेद भाँति  
 भारी भली ॥ चरण विन्यास कपर कुंकुम धूरि पूरि रहि  
 दिशि विदिशि कुंज वन की गली । कुंद मंदार अरविद सकरंद  
 मद पुंज पुंजनि मिले मंजु गुंजत अली ॥ गान रस तान के  
 वान वेधो विश्वजान अभिमान मुनि ध्यान रति दल मली ।  
 अधर गिरिधरण के लागी अनुराग सों जगत विजयी भई  
 मुरली काकली । रस भरे मध्य मण्डल विराजत खरे नंदनंदन  
 कुंवरि वृषभानु की लली ॥ देखि अनिमेख लोचन गदाधर युगल  
 लेखि जिय आपनि भाग महिमा फली ॥

— ० —

रास में जराय जटित मर्कतमणि हेम खचित नील पीत हरित  
 रंग मंडल की शोभा । अति अद्भुत भलकत छवि रहे अभूत  
 शोभा फवि बीच बीच सुरत रंग उपजत अति गोभा ॥ एक रूप  
 एक वैप एक ही समान सबै एकनै विचित्र एक चितवत चित ।



## ❀ ज्ञानदागीतचिंतामणि ❀

[ ५१ ]

चोभा । नवल सखी अति उदार देखत छवि बार बार बारि  
फेरि डारत मन मनसिज मन लोभा ॥२॥

( विहागरो )

ब्रज जुवति मंडली राजत राधिका रस रंग भरी रूप शील गुण  
समुद्र लाल भावनी । प्यारेलाल देत ताल चुटुकि चुटुकि छवि  
विसाल थै थै थै शब्द उघटि पिय नचावनी ॥१॥ गूथत सखी  
सुमन केश माग शीपसुत सुदेश भलक तिलक चपल नैन सुख  
बढ़ावनी । राजत राकेश बदन दाड़िम सम चमक रदन शोभा सुख  
सदन मदनमद नसावनी ॥२॥ अरुण वरुण कंचुकी चल नील  
अंचल फरहरात चंचल उर हार चारु छवि सुहावनी । थै थै थै  
कर उच्चार तिरपबंध टूटे हार चरण कमल नूपुरि छवि सों  
वजावनी ॥३॥ टूटि सुरनि भीन रंग रीझ रीझ भरत अंक अंग  
अंग पर श्याम हिय रावनी । सीदामोदर हित वित विलास इह  
विधि प्यारी खेलि रास बैठि कूँज कुसुम सेज पिय रमावनी ॥४॥

( शंकराभरण )

कुंज भवन मोहन करत हैं काम केलि । बैठे पुहप तलप ऊपर  
प्यारी के कंठ भुजा मेलि ॥१॥ हाव भाव मुदु हास विलास  
ललिता पीयत सखी नैन पुट निरेलि । मथुरा हित मोहन ढिग  
राधा सुरति समय रस भेलि ॥२॥

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला दशमी ज्ञानदा ॥

ग्यारहवीं ज्ञानदा

( कल्याण )

गौर गोविंद ब्रजचंद आनंद निधि कीर्तनहि बनि नचत रसिक  
जन संगिया । प्रिय गदाधर लिये प्रेम पुलकित हिये सघन हरि  
हरि बोलि थकित गति भंगिया ॥१॥ प्रकट कंचन वरण अंतर

५२ ]

❀ क्षणदागीतचिंतामणि ❀

नवीन घन राधिका भाव भर मत्त रस रंगिया । गावत  
मधुर बैन श्रवत अरुणित नैन दुःखित जन निरखि प्रभु करत  
उल्लंगिया ॥२॥ मृदंग करताल वर मिलित सुर परस्पर श्रवन  
आनंद करत बजत उतंगिया । पतितजन पावन हे निज चरण  
राखि लै तुम जगन्नाथ गति करुण रस अंगिया ॥३

(केदारा)

इहै छवि तोही पै बनि आवे ।

बिन कंचुकी सहज सुभगता रसिक गोपालहि आवे ॥

एक ओढ़नी ओढ़ि हंसगति मनमथ मोद बढ़ावे ।

वदन सुधानिधि नव निकुंज को गहवर तिमिर नसावे ॥२

तब गुणगण गिरिधरण लाड़िलो श्रीमुख मधुरे गावे ।

श्री वल्लभ पदरज प्रतापते कृष्णदास बलि जावे ॥३

(केदारो)

रंग रंगीलो री नदनंदन आछी वाँसुरी बजावे । भूली मृगी सी  
गोपी ढिंग ठाढ़ी मधुर मधुर खर गावे रिझावेरी तानहीं तानन  
अद्भुत गति उपजाव ॥१॥ सिला सलिल कीने सलिल सिला  
कीने खग मृग नगन की कौन चलावे । नंददास प्रभु के नाद  
विवस भये वेश कीन्हे वृंदावन कछुव सुधि न रहन पावे ॥२

(कल्याण)

रास में रसिक मोहन बने भामिनी । सुभग पावन पुलिन सरस  
सौरभ नलिन मत्त मधुकर निकर शरद की जामिनी ॥ त्रिविध  
रोचक पवन ताप दिनमनि दवन तहां ठाड़े रवन संग शत  
कामिनी । ताल वीणा मृदंग सरस नाचत सुधंग एकतेँ एक  
संगीत की स्वामिनी ॥२॥ राग रागिनी जमी विपिन वरसत  
अमी अधर विंव निरमी मुरली अभिरामिणी । लागत उरप सप्त  
सुरसों सुलप लोत सुंदर सुधर राधिका नामिनी ॥३॥ तत्त थैथै



करत गति बनौ तन धरत पलटि डगमग ढरति मत्त गज  
गामिनी । धाइ नव रंग भरी उरसि राजत खरी उभै कलहंस  
हरि वंस घन दामिनी ॥ ४

( केदारो )

ए दौउ नाचत रास में रसिक प्यारी,  
प्यारेलाल देखत सबहिनिकों मन हर्यौ ॥  
नख शिख कुँवरि शिंगारि छवि उपजत भारी,  
तत्ताथै बोलत डोलत लालन विहारी ।  
मधुर मृदंग बजावत ललितारी सुधंग दै सीसों न्यारी ।  
एक बजावत तार सों छवि उपजत न्यारी ॥  
तिन में राधिका प्यारी लेत उरप तिरप ललनारी ।  
लालन रीझ बारत कंठ की मुकता मालरी ॥ २  
सुखद वृंदावन सघन फूले पुहपारी ।  
त्रिविधि पवन रुचिकारी यमुना पुलिन रस सारी ॥  
तैसेई सौभग राकारी प्राची दिशि भयो उडुराजरी ।  
इह छवि कहन न आवै सुख सारद की उजियारी ॥ ३  
कंकन किंकिनी नूपुर बाजैरी सुनि धुनि सुनि देह विसारी ।  
रास में मगन रहत सदा घौ हारी ॥  
चारु चरण रज किशोरदास शिर धारी ।  
वृषभानु की दुलारी तिन पर तन मन बलिहारी ॥ ४

— — —

तू आवरी हूँ हों को वयारि । प्यारे सों खेलति ताहै अति जो  
श्रम भयो, अपने अंचल लै लें सुकाऊँ सखीरी रुचिर वदन पर  
श्रम की वारि ॥ श्रवण नासिका भूषण उलट्यो बिथुरी अलकें  
बांध्यो सुधारि । सूरदास मदनमोहन सो मिलिवे कों सुख जाहे  
न भावे ताकों डारों वारि ॥ २

(विहागरो)

नव वन नव निकुंज नव बाला । नवरंग रसिक रसीलो मोहन  
विलसति कुंजबिहारी लाला ॥ नव मराल जिति अर्वाणि धरत  
पग कूजित नूपुर किंकिणी जाला । विठल विपुल बिहारी के उर  
पौं राजति जैसे चंपक माला ॥२

( मारू )

ललिताजू लता भवन उभक्त सुख पावै ।  
हरखि हरखि लाड़िलो मेरी लाड़िली मनावे ॥ १  
नख शिख तें करी शिगार तलप रचि बनावे ।  
फूलनि की माला गूँथि फूलन सों पहिरावे ॥२  
नेकु नेकु प्रिय पै फेरि कंचुकी कसावे ।  
आछी आछी छवि सों दूलह दुलहिनी दुलरावे ॥ ३  
हाव भाव करि कटाक्ष विहरत हुलसावे ।  
रति विनोद सहित लै लै कंठ सों लगावे ॥ ४  
तन सों तन मिले मन सों मन मिले रिभावे ।  
मुख सों मुख जोरि जोरि आंखिन सों हँसावे ॥ ५  
किंकिणी की तानन सों मनमथ हि नचावे ।  
गति में गति लेत देत नूपुरनि बजावे ॥ ६  
अति अगाध सुख ही में रुख न कछू लावे ।  
कलह केलि करिकै फेरि कुचनहिं परसावे ॥ ७  
रसिकन की स्यामा प्रिय रसिकता जनावे ।  
सुख निधान सुख सुख निधि बरसावे ॥  
हा हा करि चरणन गहि मानिनी मनावे ।  
तहा अद्भुत रस रीति सुरत कोटिक उपजावे ॥ ८  
मानिनी मनाय प्रिय उछंग लै बैठावे ।  
अतिहि प्रसन्न प्रिय सों निज अलकें सुधरावे ॥ ९



योवन के चाहिवे में पलकउ न लगावे ।

रस ससुद्र बाढचौ मरजादा को गहावे ॥ १०

नवल सखी सखीयन में महलिनी कहावे ।

इह विनोद सजनी होय कुंजन में गावे ॥ ११

॥ इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला एकादशी क्षणदा

### चारहवौ क्षणदा

गौर गोविंद नवलकिशोर सखी चित चोर छवीले ठाड़े हैं द्रुम  
की छँइयाँ । अधर धरे मुरली ऊँचे स्वर लीयें सुनिरी तोहे बुला-  
वत है माईरी तू कत कहत नहि याँ ॥१॥ विन हीं अंजन खंजन  
से नैना प्रिय मन रंजन रहे तिरछी हूँ प्रिय मन महिबां । सूर-  
दास मदनमोहन को ध्यान तेरो निशि वासर सखि कौन प्रकृति  
तो पहिबां ॥२

इहै छवि तोहि पै बनि आवे ।

विना कंचुकी सहज सुभगता रसिक गोपालै भावें ॥

एक ओढ़नि ओढ़ हंस गति मनमथ मोद बढ़ावे ।

चदन सुधानिधि नव निकुंज को गह्वर तिमिर नसावें ॥

तुव गुण सागर गिरिधरण लाडिलो श्रीमुख मधुरे गावें ।

श्री बल्लभ पद रज प्रताप ते कृष्णदास बलि जावें ॥

राग केदार

तू गोपाल बोली चलि बेगि मृगजलोचनी,

नव रंगी गिरि राज धरन मुदित रास रंगे ।

सप्त सुरस वेणु गान अद्भुत रूप ताल मिल्यो,

गावत केदार राग युवति यूथ संगे ॥

सुरति देन कों कुवर नागरि विचित्र नारि,

और नहिं भुवन मांहि नागरी सुभंगे ॥

नृत्यत गति मूर्छादिक ताल सहित तत्त थेई,  
 नाहिन रस चाहि देत बिना तोहे उपंगे ॥  
 उरप तिरप विहिन मानो निरखि थकित व्योम विमान,  
 सगण चंद विथकित भयो रूप मान भंगे ॥  
 कृष्णदास स्वामिनी मनोज वेष राधिके  
 रसिक कंठ लागि सुख देत अभंगे ॥

नृत्यत रास मंडल मध्य राधाजू रूप गुन अगाधा कल्लु छवि कहि  
 न परत । चलत ललित गति सुभाई अरुण वरण भाई मिलि  
 मिलाई मानों तहाँ रिझ रिझ धरणी जीम धरत ॥ तिरपी लेन  
 में मणि के भूषण जगमगात मानो अनेक अलात कंचन दंड सों  
 लागि फिरत । नंददास प्रभु प्यारी पद की प्रेम लटकि हरि कों  
 हिय हरत ॥ २

( केदारो )

श्री वृषभानु नांदिनी नाचत लालन गिरिधरण संग । लाग डाट  
 उरप तिरप रास रंग राख्यो । रूप ताले मिल्यो राग केदारो सप्त  
 सुरनि औशरवर सुधर तान गान रंग राख्यो ॥ पाइ सुख सुरति  
 सिंधु भरत व्यविध रिद्ध अभिनव दल सत सोहाग हुलास रंग  
 राख्यो । बनिता शत यूथप पिय निरखि थकित सगणचंद बलि-  
 हारी कृष्णदास सुजस रंग राख्यो ॥२

( केदारो )

आज मोहन रच्यो रास मंडल मध्य राधा रूप गुन अगाधा  
 कहि न परत । चलत ललित गति सुभाव अरुण चरण भाँई  
 मिलमिलाई सुंदर पुलिन सुभग सुखदायक राजत ॥ १ ॥  
 नव नव घन अनुराग परसपर खेलत कुंवर नागरी नायक शीतल  
 हंस सुता रस बीचिन परसि पवन सीकर मृदु बरसत । बर  
 मंदार कमल चंपक कुल सौरभ सरस मिथुन मन हरषत । सकल



सुधंग बिलास परावधि नाचत नवल मिले सुर गावत ॥ मृगज  
मयूर मराल भ्रवर पिक अद्भुत कोटि मदन सिखावत । निर्मित  
कुसुम शयन मधुपूरित भाजन कनक निकुंज बिराजत ॥ रजनी  
मुख रास परस्पर सुरत समर दोऊ दल राजत । बिट कुल नृपति  
किसोरी कर धृत बुधि बल नीवि बंधन मोचत ॥ नेति नेति  
वचनामत बोलत प्रणय कोप प्रीतमनहिं सोचत । हित हरिवंस  
रसिक ललितादिक लता भवन रंघन अवलोकत ॥ अनुपम सुख  
भर भरित परस्पर असु आनंद वारि कंठ गहि दृग रोकत ॥

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला द्वादशी क्षणदा ॥

—०—

### तेरहवीं क्षणदा

शची नंदन रस रूप ।

प्रकट गौर वरण तन भावित अंतर स्याम स्वरूप ॥

सहज सुवास हास रस आनन लोचन कमल स्वरूप ।

हेरत सहज वेधत नागरि हिय उर नैनन के सरूप ॥

भाव तिलक श्वेत बसन काटि पद तल कमल स्वरूप ।

पद बिन्यास चारु हस्तक गति मोहत जगत स्वरूप ॥

हरि हरि बुलावति अंगुरी फिरावति उपमा नहीं सरूप ।

वरसत प्रेम छेम सकल जीव अंग अंग मदन स्वरूप ॥

—०—

वृषभानु नंदिनी मधुर कल गावे । बिकट ओधर तान चर्चरी  
ताल सां नंदनंदन मनसि मोद उपजावैं ॥ प्रथम मज्जन चारु  
रुचीर कज्जल तिलक श्रवण कुंडल वदन चंदनि लजावैं । सुभग  
नक बैसरी रतन हाटक जरी अधर बंधुक दशन कुंद चम-  
कावैं ॥ बलय कंकड चारु उरसि राजत हार कटि व किकिणि  
चरण नूपुर बजावैं । हंस कल गामिनी मथत मद कामिनी नखनि

५८ ]

## ❀ क्षणदागीतचिंतामणि ❀

मद यंतिका रंग रुचि द्यावें ॥ नृत्य सागर रभस रहसि नागरि  
नवल चंद चाली विविध भेदनि जनावे । कोक विद्या विदित  
भाव अभिनयनिपुन भ्रुविलासनि मकर केतनि नचावे ॥ ४ ॥  
निविड कानन भवन बाहु रंजित रमन सरस आलाप सुख पुंज  
बरसावे । उभै संगम सिंधु सुरत पूषण बंधु द्रवत मकरंद हरि-  
वंस अलि पावें ॥ ५ ॥

## विहागरो

छबीले नील घन की पूतरी क्रीडत वृंदावन माहीं । विविध  
भूषण धरे वंशी करतल करें चलत देखत परछाईं ॥ सबहि को  
हियो करसें शोभा बदन बरसें गोपी लोचन चातक पीवत जाहीं ।  
नंददास प्रभु एक दामिनी सी ठग ठाड़ी तार्के गरे गरवाही ॥ २ ॥

## ( कल्याण )

आजु नागरी किशोर भाँवतो विचित्र जोरि कहा कहौ अंग  
अंग परम माधुरी । करत केलि कंठ मेलि बाहु दंड गंड गंड  
सरस रास लास मंडली जुरी ॥ श्यामसुंदरी विहार : बाँसुरी  
मृदंग ताल मधुर घोष नूपुरादि किंकिणी चुरी । देखत हरिवंस  
आली नर्तनी सुधंग चाली वारि फेर देत प्राण देह सों दुरी ॥ ३ ॥

## ( मालव )

माधौ रुचिर रमित रच्यो रास । कुसुमित कानन सब द्रुम  
बेलिनि चकित उडुप विकास ॥ यमुना तीर भीर खग मृग की  
मंद सुगंध सुवास । युवति जुगल युगल प्रति माधौ करति  
विनोद विलास ॥ ताल पखावज रवाव बासुरी उपजत तन  
तरास । नृत्यत गोपी करत कौतूहल लोचन पद्म पलास ॥ वरसत  
कुसुम इंद्र सुरपाता संकर तजि कैलास । कृष्णदास प्रभु गिरि-  
धर क्रीडत कथा कथित शुक व्यास ॥ ४ ॥



## ( सोरठा )

सांवलिया रंग भीने ।

मधुर मधुर मुरली बाजे काम सिखे ब्रज दीने ॥

मोरके चन्दा भूषण भूषित पीत पीतांबर धारी ।

गोप वधू ब्रज मंडल मंडित रास रच्यो वनवारी ॥

यमुना के तट शरद जामिनी पूरण चंद्र प्रकासी ।

कमल कली रस वल्लभ वाले भंवर कन्हैया वासी ॥

श्री रंग रूप रची ब्रजसुंदरी रैन विहात न जानी ।

नाम देव के स्वामी अंक आलिङ्गित प्रेम समुद्र समानी ॥४

जमुना के पुलिन में खेलत मुरारि । रास मंडल रच्यो संग ब्रज नारी ॥ कंकण किकिणी नूपुर झनकार । बाजत मृदंग वीणा झांझ ढप तार ॥ तत्ता थेइ तात्थेइ तार अपार । पीतांबर छवि बारण पार ॥ कोकिला कीर ध्वनि मधुप गुंजार । विविध पवन वहे मलय सुदार ॥ सब गोपिन मिलि कीयो है सिंगार । तिन संग विहरत नंदकुमार ॥ रीझ पहिरावत मुक्ता माल । प्रेम भगन भये नंद के लाल ॥ गोकुलकेवासी श्रीकृष्णमुरारी । यशुमति नंदन राधा उर हार ॥ नाचत गावत गोपी सुधंग अपार । नामदेव के स्वामी वृंदा विपिन विहार ॥८

## ( विहागरो )

खेलत रास रसिक नागर ।

मंडित नव नागरी रसिक वर रूप को आगर ॥

विकच वदन बनिता राजत तैसे सरद अमल ।

राका सुभग सरोवर मधि मानों फूले कमल ॥

नव किसोर सुंदर साँवरे अंग बलित ललित ब्रजवाला ।

मनौ कंचन मणिमय मंजुल वृंदावन पहिरी माला ॥

या छवि की उपमा कहिये को ऐसो कवि को धौं पढ्यो है ।  
नंददास प्रभु कौ कौतुक देखि काम के काम बढ्यो है ॥४

विहागरो

साँवरे प्रीतम के संग राजत रंग भीनि भामिनी । नृत्यति चंचल  
गति द्युति न कहि परति लहलहनि सीखि जहा दामिनी ।  
जुवति मण्डल मध्य रूप गुण कि अवधि यातें सिद्धि पावें सब  
संगीत की स्वामिनी ॥ राग रागिनी की रानी तत्ताथेइ कलबानी  
कल्लुक सीखि कोकिल की कामिनी ॥ उरप तिरप मान अति  
अद्भुत गान मोहे खग मृग उड़ चंदा जामिनी । नंददास रीझ  
जहाँ आपनों पो वारयो तहाँ रमणि मनि रमा अभिरामिणी ॥

विहागरो

आज अति श्रमित विहारिणी जानि ।

तांडव रास नृत्य मंडल तें उर धरि प्यारी आनि ॥  
श्रम जल पौछित कर पंकज सों बीजत अंचल पानि ।  
वीरी देत बनाय वदन विधु प्रेम चतुर अभिमनि ॥  
पौढ़त किशलय तलपहि राधा निज उर ऊपर आनि ।  
हरिवल्लभ बीजत पद सेवत आलि सहित सयानि ॥

-----

सुथरी गुलावन की पांखुरी सजी है सेज तामें मिले अंग अंग  
सोभा सरसात है । सुघर समाज सिरताज साज काज आज  
एक एक बात भाँति भाँति दरसात है ॥ तन मन हरण करण  
गुण रूप भूप रीझ रीझ भीजि भीजि हियो हरसात है । ललिता-  
दिक नैन हित चावृग विचित्र एन पिय प्यारी संग रस रंग  
बरसात है ॥ २

इति श्रीगीतचिन्तामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला त्रयोदशीक्षणदा ॥

---o---



## चौदहवीं क्षणदा

( बिहागरो )

अचरज रस सागर की भंगी ।

खेलत सुरति रण तजि रमणीगण लें चले राधा संगी ॥

नख शिख अंग अनंग महारस राधाधर मधु पाने ।

रसिक मुकुट सुख मत्त और युवति जन जू न जाने ॥

कुसुम सिंगारणि वृषभानुनंदिनी वदन वदन विधु राखि ।

उरधरि फिरत तरणि तनयातट मनमथ भूपति साखि ॥

तबहुँ अचानक हरिवल्लभ अति कौतुक भर अति धीर ।

राधा तजि वन में दुरि देखत विरहानल की पीर ॥

—०—

मोहन मदन त्रिभंगी । मोहन मुनिमन रंगी ॥

मोहन मुनि सघन परमानंद गुण गंभीर गोपाला ।

सीस किरीट श्रवण मणि कुंडल उर मंडित वनमाला ॥

पीतांबर तन धातु विचित्रित कल किंकिणी कटि चंगी ।

नखमणि तरणि चरण सरसी रूह मोहन मदन त्रिभंगी ॥१

मोहन बेणु बजावे । यह रव नारि बुलावे ॥

आई ब्रज नारि सुनत वंसीरव गृहपति वंधु विसारे ।

दरसन मदन गोपाल मनोहर मनसिज ताप निवारें ॥

हरसित वदन वंक अवलोकनि सरस मधुर धुनि गावे ।

मधुमय स्याम समान अधर धरि मोहन बेणु बजावे ॥२

रास रच्यो वन माहीं । विमल कलप तरु छाई ॥

विमल कलप तरु तीर सुपेसल सरद रैन वर चंदा ।

सीतल मंद सुगंध पवन वहे तहाँ खेलत नंदनंदा ॥

अद्भुत ताल मृदंग मनोहर किंकिणी शब्द कराहीं ।

यमुना पुलिन रसिक रस सागर रास रच्यो वन माहीं ॥३

देखत मधुकर केली । मोहे खग मृग वेली ॥  
 मोहे खग मृग धेनु सहित सुर सुंदरि प्रेम मगन पट छूटे ।  
 उडगण चकित थकित शशि मंडल कोटि मदन मन लूटे ॥  
 अधर पान परिरंभन अति रस आनंद मगन सहेली ।  
 हित हरिवंस रसिक सुख पावत देखत मधुकर केली ॥

( कल्याण )

करत हरि नृत्य नव रंग राधा संग लेत नव गति भेद चर्चरी  
 ताल के । परस्पर दरस रस मत्त भये तत्त थै थै वचन रचन  
 संगीत सु रसाल के ॥ फहरत वरह वर ढरहरत उर हार भर  
 हरत भंवर वर विमल वनमाल के । खसत सित कुसुम सिर  
 हसत कुंतल मनौ लसत कल झलमलत स्वेदकण भाल के ॥  
 अंग अंगनि लटक मटक भंगुर भौह पटक पटतार कोमल  
 चरन चाल के । चमकि चल कुंडलनि दमक दसनावली विविध  
 व्यंजित भाव लोचन विसाल के ॥ वजत अनुसार दृभि दृभि  
 मृदंग निनाद झमकि झं झंकार किकिणी जाल के । तरल तर-  
 फत तड़ित नील नव जलद में यों विराजत प्रिया पास गोपाल  
 के ॥ ब्रज युवति यूथ अगनित वदन चंद्रमा चंद्र भये मंद उद्योत  
 तिहि काल के ॥ मुदित अनुराग वस राग रागिनि तान गान  
 गति गर्व रंभादि सुरवाल के ॥ गगन चर सगन रस मगन वरसत  
 फूलवारि डारत रतन जनन भरि थाल के । इक रसना गजाधर न  
 वरनत वने चरित अद्भुत कुँवर गिरिधरन लाल के ॥

—०—

आजु वन नीको रास बनायो । पुलिन पवित्र सुभग जमुना तट  
 मोहन वेनु वजायो ॥ कल कंकण किकिणी नूपुर धुनि सुनि  
 खगमृग सचु पायो । युवतिन मंडल मध्य स्याम घन सारंग  
 राग जमायो । ताल मृदंग उपंग मुरज डफ मिलि रस सिंधु



बढ़ायो ॥ विविध विसद वृषभानुनंदिनी अंग सुधंग दिखायो ।  
 अमिनय निपुन निपुन लटक लट लोचन भृकुटि अनंग नचायो ॥  
 ताताथेई ता थेई धरति नूतन गति पति ब्रजराज रिझायो ॥  
 सकल उदार नृपति चूड़ामणि सुख वारिद वरसायो । परिरंभन  
 चुंवन आलिगन उचित युवति जन पायो ॥ वरसत कुसुम मुदित  
 नभनायक इंद्र निसान वजायो । हित हरिवंस रसिक राधापति  
 जस वितान जग छायायो ॥

—०—

दोउ जन मंडल नृत्य करै ।

लटकनि ललित चलन गति चंचल दीन्हे भुजा गरे ॥  
 बेनु वीना किकिणी नूपुर धुनि वाजत सुर मधुरै ।  
 हित अनूप ललिदादिक लोचन आनंद वारि भरै ॥

—१—

कैसे नीके नृत्य करत मंडल परिमोहन मदन गोपाल । संग लीये  
 वृषभानुनंदिनी वय गुण रूप रसाल ॥ मुकुट की लटक पीतांबर  
 की छवि कुंडल किरण विशाल । नटवर वपु गति कटि किकिणी  
 रच मोहे शब्द मराल ॥ चिचुक चारु गहे अंस बाहु दिये रिझा-  
 चत प्यारी लाल । बलया बलित कर ललितादिक सखि ताता  
 उत्थगति ताल ॥ वंसी कलरव मोहे खग मृग मोही ब्रज की  
 चाल । छुट्टी अलक गंडन ढिंग मानो भ्रमर भ्रमत छवि जाल ॥  
 अंग अंग बहुरंग भरयोरी रसिक राय नंदलाल । याही अमित  
 माधुरी अटक्यो हित अनूप तिहि काल ॥५

(विरागरो)

जय जय वृंदा विपिन पुरंदर । रसिक शिरोसणि मधुर रूप  
 गुण तीनहुँ लोक उजागर ॥ मंडल रास नृत्य अति मंडित दोऊ  
 तुम रस सागर । रजनी बहुत गई कुंजे सुख खेलन को अव  
 अवसर ॥ सहचरी वचन सुनत ही कुंजे चले दोऊ मनोहर ।

वल्लभ आलि सेवा सुख पावै पौढ़त ही नव नागर ॥

विहागरो ॥ यात्रा ॥

मदनमोहन संग मोहिनी कुंज सदन में विलसत नवरंगे । प्राण  
प्यारी प्राण प्यारी लटपटाय पग रहे आधे आधे वचन कहत  
माते अनंगे ॥१॥ परसत गह चिबुक बिंदु चाहि रहत वदन इंदु  
हँसि हँसि हँसि जात कवहु लैत उछंगे । गोविंद बलि विचित्र  
जोरि नवकिसोर नवकिसोरी गावत केदारो राग सुधर तान तरंगे  
इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला चतुर्दशी क्षणदा ॥

--०--

पन्द्रहवीं क्षणदा

( कल्याण )

सारद शशि किरण पुंज रंजित निज विपिन कुंज देखि रमण  
साभिलास रास रंग सौं । रसिक मौलि श्री गोपाल मंजु वेश  
पुहपमाल बनि ठनि बनि आये एक मुरली संग सौं ॥१॥ राखि  
वदन चंद्र कोर अधर सुधा देइ अकोर पठइ अति वेग चतुर  
दूति वंसिका । जाहि तबहि एक काल घर घर सब गोप बाल  
कान पकरि पकरि मदन मंत्र संसिका ॥२॥ विवश भयो तबहि  
देह विसरयो सब गेह नेह मनहु लोक लाज निकसि लाज तें  
गई । मृगमद सों नैन अंजि यावक रस भाल राजि कज्जल उर  
कंठ खोलि किंकिरी दई ॥३॥ अस्त व्यस्त वसन वेस आई सब  
विपिन देश मानहु अनुराग राशि रूप धारिणी । मोहन नव  
जलद अंग काम केलि सुख तरंग भामिनी मानो दामिनी मिलि  
सुरत भारिणी ॥४॥ सुनहु आये गोप राम अवत इहाँ कौन  
काम रजनि घोरि तुमहु भोरि कुल कुमरिका । तुमहु सुनहु रसिक  
राज वसत इहाँ कौन काज नंद सुनु जिनकी रीति धर्म  
धारिका ॥५॥ खेलत हम संग रहित केवल मुरली समेत वेगि



चलहु कामिनी जन निज पतिनु पाश को । आई हम सखिन संग  
 चाँदिनी विलोकि रंग याइते रहसि मुरलिसों विलासको ॥६॥  
 कौन रीति हाय हाय स्त्रीजन हमें नाहि सुहाय जाहुते दूर पुरुष  
 धर्म हारिका । खेलति जहाँ युवति राति नहि रहे तहाँ पुरुष  
 जाति एकै कंस राजनीति शास्ति कारिका ॥७॥ धरत उरहि गर्व  
 भाव हमहूँ को डर देखाव कोटि कंस मारहुँ एक अंगुली बल  
 सों । मारत तुम बहुत गाल जानत हम सर्व काल काहेकों हठ  
 करत कपट भाखन छलसों ॥८॥ आई तुम अंग साज हमसों कछु  
 लरन काज आव लरें सबसों किधौँ एक एक सों । इति कुभाखि  
 रसिक वीर युवतिन की महा भीर मध्य परे पकरि गरोरन  
 अनेक सों ॥९॥ सबहि भाम शर कटाख डारत सब लाख लाख  
 तवहि कवच कंचुक हरि भेदि नखर हाने । बांधत भुज भुजग  
 पास नाहि रहत अंग वास मधुप यूथ राजत तहां सुरत समर  
 गानें ॥१०॥ खोलत मणि जटित रसन निविड़ करत अधर दशन  
 पीवत मकरंद मधुर वदन कमल के । हरिवल्लभ आलीकुल हेरि  
 हेरि मोद अतुल पावत गुण गावत रस मत्त जुगलके ॥११॥

( पंचम )

वने आज नंदलाल सखि प्रेम मादक पिये संग ललना लिये  
 जमुन तीरे । फूल केसरि कमल मालती सघन वन मंद सुगंध  
 शीतल समीरे ॥ नीलमणि वरण तन कनक चित्रित वसन परम  
 सुंदर चरण परसि माला । मधुर मृदुहास परकास दशनावली  
 छवि भरे इतरात दृग विशाला ॥ किये चंदन खौरि वदनारविंद  
 मकरंद लुवधे भ्रमर कुटिल अलके । हलत कुंडल लटकि चलत  
 जब स्याम वन मणिन की कांति कल गंड भलकें ॥ एक चंपक  
 तनी कृष्णरस माति कर राग पंचम संग लागि सोहैं । एक हरि  
 मुख निरख धरि रही ध्यान मनो चित्र सम भई हरि हियो मोहैं ॥

एक स्यामे हेरि सुभग लोचन फेरि विहसि बोली भले कान्ह  
कपटी । एक सोधे धरी छुटे वारनि खरी चंद्रमुखी कंचुकी बिना  
रीझ लपटी ॥ एक दामिनि सी भुज मेलि ग्रीवा बात कहत मिस  
आय मुखसों मुख लगायो । एक नव कुंज में खेंचि रही कटि  
बंध आपने लाल चित चोर पायो ॥ एक स्यामा कनक कंज  
वदनी प्रेम मकरंद भरी हरि निरखि विकसी । ताके रस लुवध  
रहे लपटि स्यामर भ्रमर प्राणप्यारी भुजनि बीच जुलसी ॥  
रसिकमणि रंग भरे विहरि घुंदाविपिन संग साखि मंडली प्रेम  
पागी । कहि भगवान हित रामराय प्रभु सों मिलि सोई जन  
जाने जाकों लगन लगी ॥

### विहागरो

अचरज रस सागर की भंगी । खेलि सुरति रन तजी रमणीगण  
लै चले राधा रंगी ॥१॥ नखशिख अंग अनंग महारस राधाधर  
मधु सने । रसिक मौलि मुखमत्त और युवतिन मनमें नहि  
आने ॥२॥ कुसुम सिंगारिणि रमणि सिरोमणी मुख कमले मुख  
राखि । उर धरि फिरत तरणि तनयातट मनमथ भूपति साखि ॥३॥  
तबहुँ अचानक हरिवल्लभ अति कौतुक भरि अति धीर । राधा  
तजि वन में दुरि देखत विरहानल की पीर ॥

### विहागरो

तुम पर सबै हम वारियां वारि डारियां । उचित नहीं हमें छाड़ि  
जात पिय जानत पीर हमारियां ॥ नंदकिसोर स्यामघन सुंदर  
चातक गोप कुमारियां । दूँदत वन वृक्षत द्रुमवेली नाथ हो नाथ  
प्रकारियां ॥२॥ तुमबिनु दुःसह दुःख अति वाढ्यो लाग्यो भीत  
गुहारियां । दरशन देह ऐसे जिन मारे हमें हूँ तो तुम्हें प्यारियां ।  
नटवर वपु अति धीर महा भुज अंग सुधंग सुधारियां । सुंदर  
मुख हम तन हँसि हेरनि वनि अलंके घुंघुरारियां ॥ उर विसाल



वनमाल विराजति चंद्रिका सीस वारियां । रूप सुधा ललि  
नैनन वेची दासी भई तुम्हारियां ॥ प्रकटे आये प्रीत मण्डन पिय  
जिय उठी ब्रजनारियां । मुक्तामाल पीतांबर धारें नम्र अंखियां  
अनियारियां ॥६॥ मदनमोहन गोहन सों ही ब्रजसुंदरी रूप उजा-  
रियां । जमुना पुलिन कुंज कुसुमित पिय सुख वरसा विस्तारियां ॥७  
नंदलाल रस मूरति तकि मुनि सुरवधू देह विसारियां । रामराय  
प्रभु गिरिधर भगवान दास बलिहारियां ॥८

(केदारो)

आली रास मण्डल मध्य नृत्य करत मदनमोहन अधिक सोंहन  
लाडिली रूप निधान । चरण चारु हस्त भेद नृत्यत आछी  
भाँतिन मुख हास भ्रुव विलास लेत नैन ही में मान ॥१॥ गावत  
वेनु बजावत दौड रीझि परस्पर रिझावत आकौं भरि भरि लेत  
सुख पावत उरप तिरप होइनि विकट तान । परमानंद स्वामी  
और निरखत ललितादिक वारत निज प्राण ॥२॥

(केदारो) इकताला

रासमंडल मधि रंग रह्यो नृत्यत वाह जोटी गोपी मिलि कान्ह ।  
पाइन नूपुर बजावे हस्तक भेद बतावें गिडिगिडि ताथै ताथै लेत  
उरप तिरप मान ॥ वेनु धुनि नाद छई पचन की गति मंद भई  
जमुना थकित भई सुर नर मुनि टरयो ध्यान । रस समूह राधा  
मोहन की जोरी पर वारत जन हरिया अपने तन मन प्राण ॥

(विहागरो) इक०

सरद सुहाई हो यामिनी भामिनी रास रच्यौ । वंसीवट जमुनातट  
शीतल मंद सुगंध समीर सच्यौ ॥ उरप तिरप गति लेत सुलप  
अति निरखन विथकित मदन लच्यौ ॥ वाजत ताल मृदंग राधा  
संग मोहन सरस सुधंग नच्यौ ॥ कोक कला संगीत रीति रस  
रूप मधुरता गुनन वच्यौ । भ्रुकुटी विलास हास रस वरसत  
व्यास परम सुख नैन सच्यौ ॥३॥

६८ ]

## ❀ क्षणदागीतचिंतामणि ❀

(नट राग) चौताला

उरभी कुंडल लटक वेसरसों पीतपट वनमाला बीच आनि  
 उरमें हैं दोऊजन । नैननि सों नैननि प्राण प्राणन सों अरुमि रहे  
 चुटकीलि छवि देखें लटपटात स्याम घन ॥ होड़ा होड़ी नृत्य करे  
 रीम रीम अंक भरे तत्ताथै तत्ताथै रटत भए मगन । सूरदास  
 मदनमोहन रासमंडल में प्यारी के अंचल लै लै पौछत है  
 श्रम कन ॥२

विहागरो

जय जय जय गोप नारि केलि कौतुकी । रास नृत्य पूर्ण जानि  
 करत आजु वेनु पानि वनाविहार लीला अति चित्र हेतुकी ॥१॥  
 वाम बाहू प्रिया अंस झलमलात प्रिया वतंस वाम पानि पल्लव  
 कुच कुंभ में धरे । मधुर मंद मंद चलत अंग अंग वसन हलत  
 वाजत मनि किंकिणी अति माधुरी भरे ॥ मंजु कुसुम रचित  
 वेस करत कुंज में प्रवेस करक कदल अदल कांति मदन वर्षिनी ।  
 मृदुल तलप शयन केलि वल्लभ सेवा सहेलि समय जानि निकसि  
 बलि जालदर्शिनी ॥३

विहागरो

दम्पति सेज में रसमसे ।  
 दामिनी पर घन रु घन पर दामिनी ज्यौ लसे ॥१॥  
 नव बाल लालन भुज मृणालन गाठ फंद निकसे ।  
 अधर विव सुदशन दाढ़िम अरस परस निदसे ॥२॥  
 नैन नैननि हीये हीये सों जंघ जुगल निगसे ।  
 भनित वचन सुनृत्य सुनि सुनि मंद मंदनि हंसे ॥३॥  
 केलि सागर मार्मि दोउ चौप चौपनि धसे ।  
 रतन भूषण कुसुम माला अंग अंगनि खसे ॥४॥  
 प्रेम पंक अगाध में ललितादि गज मन फँसे ।  
 नित्य हित ब्रजलाल हाँये इहि विधिसों बसे ॥५॥  
 इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागो शुक्ला पंचदशी क्षणदा ॥



आरुणाय-श्रद्धाञ्जलि  
प्रस्तुति, वरुणा  
समर्पणम्

आप्राय  
भरतनिधि, क